CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2014 with Solution PDF-Set 2/1/2 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. स्वार्थ का ज़हर
जब तक आवृत रखेगा
मानवता की आकृति को
और
स्वार्थ की नींव जब तक
जुड़ी रहेगी धन के गारे से
तब तक
आत्मसंतोष केवल
कल्पना की वस्तु होगी ।
कितने ही त्याग और
धर्म के उपदेश करें
अभावों की यह रात
सूनी-सी अन्धी रहेगी
सोचने से कार्य नहीं हो जाता
कल्पना से यथार्थ मेल नहीं खाता
आदर्श और धर्म को
काग़ज़ पर उतारने से फ़ायदा क्या,
उत्तरदायित्व और संवेदनाहीन
इन थोथी डिग्रियों से
जीवन के दुख का रहस्य
सुलझ नहीं पाता ।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [5 अंक]

1(क). किन स्थितियों में आत्मसंतोष कल्पना की वस्तु होता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में स्वार्थ को मानवता को ढकने वाला विष कहा गया है।
- धन का मोह स्वार्थ की नींव को मजबूत बनाता है; इससे वास्तविक आत्मसंतोष नहीं मिलता।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें कवि ने पहले मानवता की आकृति के स्वार्थ से ढके होने की स्थिति रखी है। इसका अर्थ है कि मनुष्य दूसरे के दुख को समझने के स्थान पर केवल अपना लाभ देखता है।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें दूसरी स्थिति धन से जुड़े स्वार्थ की है। जब तक धन का लोभ इस स्वार्थ को बनाए रखता है, मनुष्य को भीतर की वास्तविक तृप्ति प्राप्त नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष जब स्वार्थ का विष मानवता को ढके रहता है और स्वार्थ की नींव धन के गारे से जुड़ी रहती है, तब आत्मसंतोष केवल कल्पना की वस्तु होता है।

त्वरित सुझाव: दो स्थितियाँ अवश्य लिखें: मानवता पर स्वार्थ का आवरण और धन से मजबूत होती स्वार्थ की नींव।

1(ख). 'अभावों की रातें' से कवि को क्या अभिप्रेत है ? यह रात और अधिक 'सूनी' और 'अंधी' कैसे हो जाती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रात का बिंब अभावग्रस्त जीवन के दुख और निराशा को व्यक्त करता है।
- त्याग और धर्म के उपदेश तभी सार्थक हैं जब वे व्यवहार में सहायता बनें।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें रात यहाँ केवल दिन के बाद आने वाला समय नहीं है। वह ऐसे जीवन का प्रतीक है जिसमें अभाव हैं और उनसे मुक्ति की आशा दिखाई नहीं देती।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें कवि कहता है कि कितने ही उपदेश कर लिए जाएँ, अभावों की रात बनी रहेगी। दूसरों की पीड़ा के प्रति सक्रिय संवेदना के बिना उपदेश उसका सूनापन और निराशा दूर नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष अभावों की रातों से कवि का अभिप्राय गरीबी, आवश्यक साधनों की कमी और दुखपूर्ण जीवन से है। केवल त्याग और धर्म के उपदेश देने तथा अभाव दूर करने का ठोस प्रयास न करने से यह रात सूनी और अंधी बनी रहती है।

त्वरित सुझाव: रात का अर्थ वास्तविक अँधेरा न लिखें; उसे अभाव और निराशा का प्रतीक बताकर निष्क्रिय उपदेशों से जोड़ें।

1(ग). आशय स्पष्ट कीजिए :
'आदर्श और धर्म को
काग़ज़ पर उतारने से फ़ायदा क्या ?' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करने में पंक्तियों का भाव संदर्भ सहित बताना चाहिए।
- कवि विचारों और उपदेशों के स्थान पर उनके वास्तविक आचरण पर बल देता है।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें काग़ज़ पर उतारना आदर्शों और धार्मिक बातों को केवल लिखने या सैद्धांतिक रूप में प्रस्तुत करने का संकेत है। ऐसी बातें सुनने या पढ़ने में अच्छी लग सकती हैं।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें अगली पंक्तियों में कवि संवेदनाहीनता और उत्तरदायित्व के अभाव की आलोचना करता है। इसलिए उसका आग्रह है कि आदर्श जीवन के व्यवहार में उतरें और पीड़ितों का दुख दूर करने में काम आएँ।

चरण 3: निष्कर्ष आदर्श और धर्म को केवल लिख देने से कोई लाभ नहीं होता। उन्हें व्यवहार में अपनाकर मानवता की सेवा और दुखियों की सहायता करना आवश्यक है। कर्म के बिना लिखित आदर्श जीवन की वास्तविक समस्याएँ नहीं सुलझाते।

त्वरित सुझाव: काग़ज़ पर लिखने और जीवन में अपनाने के अंतर से इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें।

1(घ). 'डिग्रियाँ' क्या हैं ? उन्हें थोथी क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डिग्रियाँ औपचारिक शिक्षा और योग्यता की उपाधियाँ हैं।
- कवि शिक्षा को संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़कर देखता है।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें काव्यांश में डिग्रियों के ठीक पहले उत्तरदायित्व और संवेदना के अभाव की बात आती है। इससे स्पष्ट है

कि आलोचना उपाधियों के नाम की नहीं, उनसे जुड़े खोखले ज्ञान की है।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें यदि पढ़ा-लिखा मनुष्य दूसरों की पीड़ा के प्रति उदासीन रहे, तो उसकी शिक्षा केवल काग़ज़ी प्रमाण बन जाती है। जीवन के दुख का रहस्य न सुलझा पाने के कारण ऐसी डिग्रियाँ सारहीन कही गई हैं।

चरण 3: निष्कर्ष डिग्रियाँ शिक्षित होने की औपचारिक उपाधियाँ हैं। उत्तरदायित्व और संवेदना से रहित होने के कारण उन्हें थोथी कहा गया है; ऐसी उपाधियाँ मनुष्य के वास्तविक दुख को समझने और दूर करने में सहायक नहीं होतीं।

त्वरित सुझाव: डिग्री का अर्थ बताने के बाद थोथेपन का कारण संवेदना और उत्तरदायित्व का अभाव अवश्य लिखें।

1(ङ). 'जीवन के दुख का रहस्य' कैसे सुलझ पाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का संदेश स्वार्थ छोड़कर मानवीय संवेदना जगाना है।
- सोचना या कल्पना करना कार्य का विकल्प नहीं है; उत्तरदायित्वपूर्ण कर्म आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें कवि स्पष्ट करता है कि सोचने से कार्य नहीं हो जाता और कल्पना वास्तविकता से मेल नहीं खाती। इससे दुख को समझने के लिए वास्तविक जीवन से जुड़ने की आवश्यकता सामने आती है।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें उत्तरदायित्व और संवेदना से रहित डिग्रियाँ दुख नहीं समझा सकतीं। उनका सकारात्मक विकल्प है दूसरों के कष्ट अनुभव करना और उन्हें कम करने के लिए सक्रिय प्रयास करना।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन के दुख का रहस्य स्वार्थ त्यागने, संवेदनशील बनने और अपने उत्तरदायित्व को समझकर कार्य करने से सुलझता है। आदर्शों और धर्म को व्यवहार में अपनाकर अभावग्रस्त लोगों की सहायता करनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: अंतिम पंक्तियों के नकारात्मक कथन से सकारात्मक उपाय निकालें: संवेदना, उत्तरदायित्व और सक्रिय कर्म।

2. जिस समय लोकमान्य तिलक ने राजनीतिक क्षेत्र में क़दम रखा उस समय पूरा देश चैतन्यहीन और स्वत्वहीन हो चुका था । देश के करोड़ों निवासी जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त थे । उनमें जीवन नहीं था, एकता नहीं थी, उनका आत्मविश्वास मर चुका था । उनके मन में यह भरा जा चुका था कि अंग्रेज़ी साम्राज्य इस देश पर सदा शासन करने वाला है ।

इस परिस्थिति को बदलने की आवश्यकता तिलक ने महसूस की । उन्होंने उन्हीं असंगठित पत्तों जैसे लोगों को इकट्ठा किया और उनमें राष्ट्रीय स्वातंत्र्य के लिए संकल्प जगाया । देश का बहुसंख्यक समाज परलोक को अधिक महत्त्व देता था और इस लोक के प्रति उदासीन था । इस दृष्टि को बदलकर उन्हें जीवनोन्मुख बनाया । इस कार्य के लिए उन्होंने भगवद् गीता को नया अर्थ दिया और कर्मयोग के सिद्धान्त को लोगों के सामने रखा जो राष्ट्रीय पुनर्जागरण के कार्य में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण और प्रेरणादायक सिद्ध हुआ ।

तब हालत कुछ ऐसी थी कि अपने समाज के दोष दिखाने और पाश्चात्य समाज, जीवन, विचार और कृतित्व का गुणगान करने में ही हमारे पढ़े-लिखे विचारक गौरव महसूस करते थे । भारत के बहुसंख्यक समाज की धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज, समाज-व्यवस्था – सभी उनकी दृष्टि में हेय थी । तिलक ने इस बात को समझा और अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति लोगों का अभिमान जगाया । इसी के साथ उन्होंने समाज के विभिन्न गुटों के मध्य उत्पन्न हुए विरोधों को दूर कर राष्ट्रीयता की भावना को पैदा किया और राष्ट्रीयता की भावना से ही पूर्ण स्वराज्य की माँग का उदय हुआ जिसका प्रेरक वाक्य था – "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।"

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [15 अंक]

2(क). 'चैतन्यहीन होने' से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए कि देश की चैतन्यहीनता का क्या कारण था । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चैतन्यहीनता का अर्थ जागरूकता, आत्मविश्वास और सक्रियता का अभाव है।
- गद्यांश में अंग्रेज़ी शासन के स्थायी होने की धारणा को निराशा से जोड़ा गया है।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें लेखक बताता है कि लोगों में जीवन और एकता का अभाव था तथा उनका आत्मविश्वास मर चुका था। यहाँ जीवन न होने का आशय शारीरिक मृत्यु नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जीवन में उत्साह और सक्रियता के अभाव से है। देश की स्वतंत्र पहचान और अधिकारों के प्रति सजगता भी मंद पड़ गई थी।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें इस स्थिति का मुख्य कारण लोगों के मन में बैठा अंग्रेज़ी साम्राज्य के स्थायी रहने का विश्वास था। उन्हें लगता था कि विदेशी शासन से मुक्ति संभव ही नहीं है। इस निराशा ने एकता और संघर्ष की शक्ति कमजोर कर दी थी; इसलिए तिलक को उनमें स्वतंत्रता का संकल्प जगाने की आवश्यकता अनुभव हुई।

चरण 3: निष्कर्ष चैतन्यहीन होने का अर्थ राष्ट्रीय चेतना, उत्साह और आत्मविश्वास से रहित होना है। देशवासियों में यह विश्वास भर दिया गया था कि अंग्रेज़ी साम्राज्य सदा शासन करेगा। इससे उनकी आशा और आत्मविश्वास नष्ट हो गए तथा वे असंगठित और निष्क्रिय हो गए थे।

त्वरित सुझाव: पहले चैतन्यहीनता का अर्थ लिखें, फिर अंग्रेज़ी शासन सदा रहने की धारणा को उसका कारण बताएँ।

2(ख). देशवासियों की तुलना सूखे पत्तों से क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा का आधार उपमान और उपमेय के समान गुण होते हैं।
- सूखे पत्तों की तरह देशवासी असंगठित, अस्त-व्यस्त और जीवनोत्साह से रहित थे।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें गद्यांश में देश के करोड़ों निवासियों को जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त बताया गया है। जंगल के बिखरे पत्ते एक-दूसरे से अलग रहते हैं और किसी सजीव संगठन का रूप नहीं बनाते। यही समानता देशवासियों के बिखराव और एकता के अभाव को स्पष्ट करती है।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें लेखक इसके बाद जीवन, एकता और आत्मविश्वास के अभाव का उल्लेख करता है। इसलिए सूखापन केवल बाहरी दरिद्रता का संकेत नहीं, बल्कि भीतर के उत्साह और विश्वास के लुप्त होने का बिंब है। अंग्रेज़ी शासन को स्थायी मान लेने के कारण वे संगठित होकर स्वतंत्रता के लिए आगे नहीं बढ़ रहे थे।

चरण 3: निष्कर्ष देशवासियों की तुलना सूखे पत्तों से की गई है क्योंकि वे बिखरे हुए, असंगठित, आत्मविश्वासहीन और उत्साहहीन थे। जैसे सूखे पत्तों में जीवन नहीं होता और वे इधर-उधर बिखरे रहते हैं, वैसे ही देशवासियों में एकता और स्वतंत्रता के लिए सक्रिय संकल्प का अभाव था।

त्वरित सुझाव: सूखे पत्ते और देशवासी दोनों के साझा गुण लिखें: बिखराव, जीवनोत्साह का अभाव और असंगठन।

2(ग). 'उस परिस्थिति' में तिलक ने कौन-सा महत्त्वपूर्ण कार्य किया ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में उस परिस्थिति का संकेत असंगठित और निराश देशवासियों की दशा की ओर है।

- तिलक ने संगठन और स्वतंत्रता के संकल्प द्वारा इस दशा को बदलने का प्रयास किया।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें पहले अनुच्छेद में लेखक लोगों का आत्मविश्वास नष्ट होने और एकता के अभाव का वर्णन करता है। यही वह परिस्थिति है जिसे तिलक बदलना चाहते थे।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें दूसरे अनुच्छेद में उनके कार्य का स्पष्ट उल्लेख है: उन्होंने असंगठित लोगों को इकट्ठा किया। साथ ही उन्हें राष्ट्रीय स्वतंत्रता का लक्ष्य देकर संघर्ष के लिए संकल्पित बनाया।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक ने सूखे पत्तों की तरह बिखरे और असंगठित देशवासियों को एकत्र किया तथा उनमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करने का संकल्प जगाया।

त्वरित सुझाव: तिलक के कार्य के दोनों अंग लिखें: लोगों को संगठित करना और स्वतंत्रता का संकल्प जगाना।

2(घ). देश के पढ़े-लिखे विचारकों की क्या सोच थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारकों की सोच का उत्तर गद्यांश के तीसरे अनुच्छेद से मिलता है।
- उनकी दृष्टि अपने समाज के प्रति हीनतापूर्ण और पाश्चात्य जीवन के प्रति प्रशंसापूर्ण थी।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें गद्यांश में लेखक बताता है कि शिक्षित विचारकों का ध्यान अपने समाज के दोष उजागर करने पर था। वे अपने समाज की उपलब्धियों और सांस्कृतिक आधारों के प्रति अभिमान जगाने के स्थान पर उसके प्रति हीन दृष्टि रखते थे। विशेष रूप से भारतीय धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज और सामाजिक व्यवस्था को वे तुच्छ समझते थे।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें इसके विपरीत वे पाश्चात्य समाज और उसके जीवन, विचार तथा कृतित्व की प्रशंसा को गौरव की बात मानते थे। उत्तर में सोच के ये दोनों पक्ष देना जरूरी है: अपने समाज का अवमूल्यन और पश्चिम का गुणगान। आगे तिलक द्वारा स्वदेश के प्रति अभिमान जगाने का उल्लेख इसी मानसिकता के परिवर्तन को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष देश के पढ़े-लिखे विचारक अपने समाज के दोष दिखाने और पाश्चात्य समाज, जीवन, विचार तथा कृतित्व का गुणगान करने में गौरव अनुभव करते थे। उन्हें भारतीय बहुसंख्यक समाज की धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज और समाज-व्यवस्था हेय लगती थी।

त्वरित सुझाव: विचारकों की सोच के दोनों पक्ष दें: अपने समाज को हेय समझना और पाश्चात्य जीवन का गुणगान करना।

2(ङ). तिलक ने किस आधार पर उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन किया ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृष्टिकोण परिवर्तन का संबंध परलोक की प्रधानता और इस लोक की उपेक्षा से है।
- तिलक ने भगवद् गीता का नया अर्थ देकर कर्मयोग को राष्ट्रीय जागरण का आधार बनाया।

चरण 1: पाठ में संकेत पहचानें गद्यांश बताता है कि बहुसंख्यक समाज परलोक को अधिक महत्त्व देता था और इस लोक के प्रति उदासीन था। तिलक ने इसी दृष्टि को बदलकर लोगों को जीवन की ओर उन्मुख किया।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करें इस परिवर्तन के लिए उन्होंने गीता को नया अर्थ दिया और कर्मयोग का सिद्धान्त सामने रखा। गद्यांश के अनुसार यह राष्ट्रीय पुनर्जागरण के लिए महत्त्वपूर्ण और प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक ने भगवद् गीता की नई व्याख्या करके कर्मयोग के सिद्धान्त के आधार पर लोगों का दृष्टिकोण बदला। उन्होंने परलोक को अधिक महत्त्व देने और इस लोक के प्रति उदासीन रहने के स्थान पर उन्हें जीवनोन्मुख तथा कर्मशील बनाया।

त्वरित सुझाव: गीता की नई व्याख्या तथा कर्मयोग का नाम लिखकर परलोक से जीवनोन्मुखता की ओर परिवर्तन समझाएँ।

2(च). तिलक ने देशवासियों में अपने समाज और धर्म के प्रति अभिमान जगाना आवश्यक क्यों समझा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण संबंधी उत्तर गद्यांश में दी गई तत्कालीन सामाजिक स्थिति पर आधारित होना चाहिए।
- आत्मगौरव का संबंध अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति सम्मान से है।

चरण 1: तत्कालीन दृष्टिकोण पहचानिए पढ़े-लिखे विचारक अपने समाज के दोष दिखाने और पाश्चात्य जीवन का गुणगान करने में गौरव अनुभव करते थे। वे भारतीय धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज और समाज-व्यवस्था को हेय समझते थे।

चरण 2: आवश्यकता स्पष्ट कीजिए इस हीनभावना को दूर कर देशवासियों का आत्मविश्वास लौटाना आवश्यक था। इसलिए तिलक ने उनमें अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति अभिमान जगाया, जिससे वे राष्ट्रीय पुनर्जागरण में सक्रिय हो सकें।

चरण 3: निष्कर्ष अपने समाज और धर्म के प्रति व्याप्त हीनभावना दूर कर आत्मविश्वास तथा राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए तिलक ने आत्मगौरव आवश्यक समझा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले भारतीय समाज को हेय मानने की प्रवृत्ति और फिर उसे बदलने का उद्देश्य लिखिए।

2(छ). सामाजिक सौहार्द के लिए तिलक का क्या योगदान था ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक सौहार्द का अर्थ समाज के विभिन्न समूहों के बीच मेल और सहयोग है।
- उत्तर में तिलक का वही कार्य लिखना है जिसका उल्लेख गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में है।

चरण 1: संबंधित तथ्य खोजिए गद्यांश बताता है कि समाज के विभिन्न गुटों के मध्य विरोध उत्पन्न हो गए थे। ऐसे विरोध लोगों को बाँट रहे थे और राष्ट्रीय एकता में बाधक थे।

चरण 2: योगदान स्पष्ट कीजिए तिलक ने इन विभिन्न गुटों के बीच के विरोध दूर किए और उनमें राष्ट्रीयता की भावना पैदा की। साझा राष्ट्रीय भावना ने उन्हें परस्पर जोड़ने और एक उद्देश्य के लिए संगठित करने में सहायता दी।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक ने समाज के विभिन्न गुटों के विरोध दूर करके उनमें राष्ट्रीयता की भावना जगाई और सामाजिक सौहार्द स्थापित किया।

त्वरित सुझाव: सौहार्द के उत्तर में गुटों के विरोध दूर करने और राष्ट्रीय भावना जगाने, दोनों कार्य जोड़िए।

2(ज). तिलक की राष्ट्रीयता की भावना किस रूप में प्रतिफलित हुई ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परिणाम संबंधी प्रश्न में भावना से उत्पन्न ठोस माँग और उसे व्यक्त करने वाले कथन को जोड़ना चाहिए।
- गद्यांश में राष्ट्रीयता का चरम लक्ष्य पूर्ण स्वराज्य बताया गया है।

चरण 1: राष्ट्रीय भावना का विकास समझिए तिलक ने बिखरे और आत्मविश्वासहीन देशवासियों को संगठित किया। उन्होंने अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति गौरव जगाया तथा विभिन्न गुटों के विरोध दूर किए। इस प्रकार लोगों में एक राष्ट्र से जुड़े होने की भावना उत्पन्न

हुई। यह संगठित चेतना विदेशी शासन की स्थायी सत्ता को स्वीकार करने वाली पुरानी मानसिकता से आगे बढ़ी।

चरण 2: उसका प्रतिफल बताइए गद्यांश के अनुसार इसी राष्ट्रीयता की भावना से पूर्ण स्वराज्य की माँग का उदय हुआ। इसका प्रेरक वाक्य था, "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह कथन स्वतंत्रता को अंग्रेज़ों की कृपा से मिलने वाला लाभ नहीं, बल्कि अपना स्वाभाविक अधिकार मानने का संकल्प व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक की राष्ट्रीयता की भावना पूर्ण स्वराज्य की माँग के रूप में प्रतिफलित हुई। उसका प्रेरक उद्घोष था, "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

त्वरित सुझाव: प्रतिफल पूछे जाने पर पूर्ण स्वराज्य की माँग लिखिए और गद्यांश का जन्मसिद्ध अधिकार वाला कथन जोड़िए।

2(झ). गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक संक्षिप्त हो और पूरे गद्यांश के केंद्रीय विचार को व्यक्त करे।
- यहाँ केंद्र में तिलक द्वारा किया गया राष्ट्रीय जागरण है, केवल गीता का कर्मयोग नहीं।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानिए गद्यांश में देशवासियों की निष्क्रियता और हीनभावना के बीच तिलक के आगमन का वर्णन है। उन्होंने लोगों को संगठित किया, कर्मयोग की प्रेरणा दी और भारतीय समाज के प्रति आत्मगौरव जगाया।

चरण 2: व्यापक शीर्षक चुनिए इन सभी कार्यों का साझा उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना जगाना और पूर्ण स्वराज्य की माँग तक पहुँचना था। इसलिए शीर्षक में तिलक और राष्ट्रीय जागरण दोनों को स्थान देना पूरे कथ्य का प्रतिनिधित्व करता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक: "लोकमान्य तिलक और राष्ट्रीय जागरण।

त्वरित सुझाव: शीर्षक बनाते समय तिलक के किसी एक कार्य तक सीमित न रहें; सभी कार्यों का साझा उद्देश्य चुनें।

2(ञ). उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए :
संकल्प, स्वातंत्र्य । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले तथा प्रत्यय शब्द या धातु के बाद जुड़ता है।
- शब्द-विच्छेद में अर्थ के साथ ध्वनि-परिवर्तन और प्रचलित व्याकरणिक रूप भी ध्यान में रखने चाहिए।

चरण 1: संकल्प का उपसर्ग अलग कीजिए संकल्प में उपसर्ग "सम् है और मूल अंश "कल्प है। सम् का अंतिम म् अगले व्यंजन के प्रभाव से अनुस्वार के रूप में लिखा गया है; इसलिए शब्द संकल्प बनता है। इसका विच्छेद सम् + कल्प है।

चरण 2: स्वातंत्र्य का प्रत्यय अलग कीजिए स्वातंत्र्य का आधार शब्द "स्वतंत्र और भाववाचक प्रत्यय "य है। प्रत्यय जुड़ने पर आरंभिक स्वर में वृद्धि होती है और रूप स्वातंत्र्य बनता है। अत: इसे केवल दिखाई देने वाले अक्षरों के आधार पर स्वा + तंत्र्य नहीं बाँटना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष संकल्प = सम् + कल्प; उपसर्ग: सम्। स्वातंत्र्य = स्वतंत्र + य; प्रत्यय: य।

त्वरित सुझाव: संकल्प में अनुस्वार के पीछे छिपा सम् पहचानिए; स्वातंत्र्य में स्वतंत्र से बने भाववाचक रूप का प्रत्यय लिखिए।

2(ट). मिश्रवाक्य में बदलिए :

'देश के करोड़ों निवासी जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त थे ।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्रवाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा कम से कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- रूपांतरण में मूल वाक्य की तुलना, कर्ता और आशय सुरक्षित रहने चाहिए।

चरण 1: मूल संबंध पहचानिए मूल वाक्य में देशवासियों की अस्त-व्यस्त स्थिति की तुलना जंगल के सूखे पत्तों से की गई है। "की तरह तुलना बताने वाला पदबंध है; इसे उपवाक्य में बदलकर मिश्रवाक्य बनाया जा सकता है।

चरण 2: आश्रित और प्रधान उपवाक्य बनाइए "जैसे जंगल के सूखे पत्ते अस्त-व्यस्त होते हैं तुलना बताने वाला आश्रित उपवाक्य है। "वैसे ही देश के करोड़ों निवासी अस्त-व्यस्त थे प्रधान उपवाक्य है। जैसे-वैसे के संबंध से मूल तुलना बनी रहती है और दोनों उपवाक्यों में अपनी क्रिया भी आती है।

चरण 3: निष्कर्ष मिश्रवाक्य: "जैसे जंगल के सूखे पत्ते अस्त-व्यस्त होते हैं, वैसे ही देश के करोड़ों निवासी अस्त-व्यस्त थे।

त्वरित सुझाव: की तरह वाले तुलना-पदबंध को जैसे-वैसे के उपवाक्यों में बदलें और मूल वाक्य का भूतकाल सुरक्षित रखें।

3(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

लड़का-लड़की एक समान [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक उपसंहार होता है।
- लैंगिक समानता में शिक्षा, अवसर, सम्मान तथा निर्णय की स्वतंत्रता का समान अधिकार शामिल है।

चरण 1: रूपरेखा तैयार कीजिए भूमिका में समान मानवीय गरिमा का विचार रखें। विस्तार में परिवार की रूढ़ियाँ, शिक्षा और कार्यक्षेत्र के अवसर, घरेलू जिम्मेदारियाँ तथा परिवर्तन के उपाय आएँ। अंत में समानता को व्यवहार में अपनाने का आह्वान करें।

चरण 2: विषय के अनुकूल तर्क चुनिए जैविक भिन्नता को अधिकारों में भेद का आधार न बनाएँ। प्रतिभा विकसित करने के लिए अवसर आवश्यक हैं। उदाहरण सामान्य सामाजिक जीवन से लें और लड़का या लड़की किसी को भी स्वभावतः श्रेष्ठ न बताएँ।

चरण 3: पूरा आदर्श निबंध लिखिए **लड़का-लड़की एक समान**

मनुष्य की पहचान उसकी योग्यता, व्यवहार और संवेदनशीलता से होनी चाहिए, उसके लड़का या लड़की होने से नहीं। दोनों समान सम्मान और अवसर के अधिकारी हैं। परिवार और समाज तभी आगे बढ़ सकते हैं जब उनकी सभी प्रतिभाओं को विकसित होने का अवसर मिले।

हमारे समाज में आज भी कई परिवार लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग नियम बनाते हैं। बेटे की पढ़ाई को निवेश और बेटी की पढ़ाई को अनावश्यक खर्च समझना अन्यायपूर्ण है। बेटियों से घर का काम कराने और बेटों को उससे मुक्त रखने की आदत भी असमानता सिखाती है। ऐसी सोच बच्चों का आत्मविश्वास घटाती है और उनके सपनों को सीमित करती है।

शिक्षा, खेल, विज्ञान, प्रशासन और व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में लड़कियाँ अपनी क्षमता दिखा रही हैं। दूसरी ओर लड़के भी देखभाल, शिक्षण और घरेलू जिम्मेदारियाँ सफलतापूर्वक निभा सकते हैं। किसी काम को केवल स्त्री या पुरुष का काम कहना प्रतिभा पर प्रतिबंध लगाना है। समानता का अर्थ सबकी रुचि एक जैसी होना नहीं, बल्कि अपनी रुचि के अनुसार आगे बढ़ने की स्वतंत्रता मिलना है।

परिवर्तन की शुरुआत घर से होनी चाहिए। माता-पिता दोनों बच्चों को पौष्टिक भोजन, अच्छी शिक्षा और अपनी बात कहने का अवसर दें। घर के कार्य सब मिलकर करें। विद्यालयों में भेदभावपूर्ण टिप्पणियों का विरोध हो और सुरक्षित वातावरण मिले। समाज को दहेज तथा बालविवाह जैसी कुप्रथाओं से भी मुक्त होना होगा।

कानूनी अधिकार तभी सार्थक होंगे जब रोज़मर्रा का व्यवहार बदलेगा। निर्णय लेते समय बेटे और बेटी की बात समान रूप से सुनी जाए।

समानता किसी एक पक्ष की जीत नहीं, पूरे समाज की प्रगति है। लड़का और लड़की जीवन के सहयात्री हैं; दोनों को सम्मान और अवसर देकर ही न्यायपूर्ण भविष्य बनाया जा सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष लड़का और लड़की समान गरिमा तथा अधिकार रखते हैं। शिक्षा, परिवार और कार्यक्षेत्र में समान अवसर देकर इस विचार को व्यवहार में उतारना चाहिए।

त्वरित सुझाव: निबंध में समान अधिकार के विचार को घर, शिक्षा और काम के ठोस उदाहरणों से जोड़ें तथा उपायों सहित समापन करें।

3(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

प्रगतिशील भारत [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार आवश्यक हैं।
- उदाहरण विषय से जुड़े हों; भाषा सरल, शुद्ध और अनुच्छेदों के बीच तारतम्य रखने वाली हो।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति इस विषय पर शीर्षक के बाद भूमिका, मुख्य विवेचन और उपसंहार लिखना चाहिए। भूमिका में प्रगतिशील भारत का आशय स्पष्ट करें। फिर कारणों, प्रभावों और आवश्यक उपायों को क्रम से रखें। अंतिम अनुच्छेद में नागरिक की जिम्मेदारी और सकारात्मक दिशा सामने आए।

चरण 2: विषय-वस्तु का नियोजन पहला अनुच्छेद: विकास का आशय और उसकी दिशा। दूसरा अनुच्छेद: शिक्षा और तकनीक से उन्नति। तीसरा अनुच्छेद: समावेशी और जिम्मेदार प्रगति। चौथा अनुच्छेद: नागरिक का योगदान। किसी अप्रमाणित आँकड़े या असंबद्ध प्रसंग के स्थान पर विषय से जुड़े स्पष्ट तर्क रखें। नीचे इसी रूपरेखा पर पूरा नमूना निबंध दिया गया है।

चरण 3: पूर्ण नमूना निबंध **प्रगतिशील भारत**

प्रगतिशील भारत का अर्थ केवल ऊँची इमारतों, चौड़ी सड़कों और बढ़ते उत्पादन वाला देश नहीं है। सच्ची प्रगति वह है जिसमें प्रत्येक नागरिक को सम्मान, शिक्षा, स्वास्थ्य और आगे बढ़ने का अवसर मिले। आर्थिक उन्नति के साथ सामाजिक न्याय और मानवीय मूल्यों का विकास भी आवश्यक है।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने कृषि, उद्योग, चिकित्सा, अंतरिक्ष और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। वैज्ञानिक सोच ने अनेक समस्याओं के समाधान का मार्ग खोला है। शिक्षा का प्रसार युवाओं को नए कौशल दे रहा है। संचार के साधनों ने दूर बसे लोगों को जोड़ा है और ज्ञान तक पहुँच बढ़ाई है। किंतु इन उपलब्धियों का लाभ गाँवों और वंचित वर्गों तक पहुँचना भी जरूरी है।

बेरोजगारी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार और सामाजिक भेदभाव आज भी हमारे मार्ग की बाधाएँ हैं। इन्हें दूर किए बिना विकास अधूरा रहेगा। महिलाओं को समान अवसर, श्रमिकों को उचित सम्मान और किसानों को आवश्यक सुविधाएँ मिलनी चाहिए। प्रकृति को नष्ट करके प्राप्त समृद्धि टिकाऊ नहीं हो सकती; इसलिए जल, वन और ऊर्जा का संरक्षण विकास की योजना में शामिल हो।

प्रगतिशील भारत के निर्माण में सरकार के साथ प्रत्येक नागरिक की भूमिका है। हमें ईमानदारी से अपना काम करना, कानून का पालन करना और सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करनी चाहिए। युवा ज्ञान और परिश्रम से देश को नई दिशा दे सकते हैं। जब वैज्ञानिक दृष्टि, समानता और राष्ट्रीय एकता हमारे आचरण का हिस्सा बनेंगे, तभी भारत की प्रगति सर्वांगीण होगी।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार 'प्रगतिशील भारत' विषय का निबंध भूमिका, संगत तर्कों और रचनात्मक उपसंहार के साथ पूर्ण होता है।

त्वरित सुझाव: 'प्रगतिशील भारत' पर लिखते समय पहले चार अनुच्छेदों की रूपरेखा बना लें और हर अनुच्छेद को केवल उसके मुख्य विचार पर केंद्रित रखें।

3(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

घटती राष्ट्रीयता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार आवश्यक हैं।
- उदाहरण विषय से जुड़े हों; भाषा सरल, शुद्ध और अनुच्छेदों के बीच तारतम्य रखने वाली हो।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति इस विषय पर शीर्षक के बाद भूमिका, मुख्य विवेचन और उपसंहार लिखना चाहिए। भूमिका में घटती राष्ट्रीयता का आशय स्पष्ट करें। फिर कारणों, प्रभावों और आवश्यक उपायों को क्रम से रखें। अंतिम अनुच्छेद में नागरिक की जिम्मेदारी और सकारात्मक दिशा सामने आए।

चरण 2: विषय-वस्तु का नियोजन पहला अनुच्छेद: राष्ट्रीयता का वास्तविक अर्थ। दूसरा अनुच्छेद: समस्या के कारण और रूप। तीसरा अनुच्छेद: हानियाँ और संतुलित दृष्टि। चौथा अनुच्छेद: भावना को मजबूत करने के उपाय। किसी अप्रमाणित आँकड़े या असंबद्ध प्रसंग के स्थान पर विषय से जुड़े स्पष्ट तर्क रखें। नीचे इसी रूपरेखा पर पूरा नमूना निबंध दिया गया है।

चरण 3: पूर्ण नमूना निबंध **घटती राष्ट्रीयता**

राष्ट्रीयता देश के प्रति प्रेम और उसके सभी नागरिकों के प्रति आत्मीयता का भाव है। यह केवल झंडा फहराने या नारे लगाने तक सीमित नहीं है। देश की एकता, स्वतंत्रता और सार्वजनिक हित की रक्षा के लिए जिम्मेदारी निभाना इसका वास्तविक स्वरूप है। आज निजी स्वार्थ और संकीर्ण पहचानों के बढ़ते प्रभाव से इस भावना के कमजोर होने की चिंता दिखाई देती है।

जब जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र के नाम पर लोग एक-दूसरे के विरोधी बन जाते हैं, तब साझा राष्ट्रीय पहचान को चोट पहुँचती है। राजनीतिक लाभ के लिए फैलाया गया द्वेष भी दूरी बढ़ाता है। भ्रष्टाचार, करचोरी, सार्वजनिक संपत्ति की तोड़फोड़ और नागरिक कर्तव्यों की उपेक्षा देशप्रेम के अभाव को प्रकट करती है। केवल अधिकार माँगना और उत्तरदायित्व भूल जाना राष्ट्रीय जीवन को कमजोर करता है।

घटती राष्ट्रीयता से समाज में अविश्वास फैलता है और विकास के सामूहिक प्रयास बाधित होते हैं। किंतु विविधता को दोष देना उचित नहीं है। भारत की शक्ति उसकी अनेक भाषाओं, संस्कृतियों और परंपराओं के सहअस्तित्व में है। सच्ची राष्ट्रीयता किसी समुदाय से घृणा नहीं सिखाती; वह समान सम्मान और सहयोग पर आधारित होती है। सरकार की नीतियों की तर्कपूर्ण आलोचना भी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी हो सकती है।

परिवार और विद्यालय बच्चों को संविधान, स्वतंत्रता-संग्राम और नागरिक कर्तव्यों का परिचय दें। विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बढ़े। शासन न्यायपूर्ण हो और सभी को समान अवसर मिले। हमें अफवाहों से बचना, भेदभाव का विरोध करना तथा सार्वजनिक हित में कार्य करना चाहिए। राष्ट्रीयता तभी मजबूत होगी जब देश का प्रत्येक व्यक्ति अपने सम्मान और भविष्य को राष्ट्र के साझा भविष्य से जुड़ा अनुभव करेगा।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार 'घटती राष्ट्रीयता' विषय का निबंध भूमिका, संगत तर्कों और रचनात्मक उपसंहार के साथ पूर्ण होता है।

त्वरित सुझाव: 'घटती राष्ट्रीयता' पर लिखते समय पहले चार अनुच्छेदों की रूपरेखा बना लें और हर अनुच्छेद को केवल उसके मुख्य विचार पर केंद्रित रखें।

3(घ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

भ्रष्टाचार [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार आवश्यक हैं।
- उदाहरण विषय से जुड़े हों; भाषा सरल, शुद्ध और अनुच्छेदों के बीच तारतम्य रखने वाली हो।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति इस विषय पर शीर्षक के बाद भूमिका, मुख्य विवेचन और उपसंहार लिखना चाहिए। भूमिका में भ्रष्टाचार का

आशय स्पष्ट करें। फिर कारणों, प्रभावों और आवश्यक उपायों को क्रम से रखें। अंतिम अनुच्छेद में नागरिक की जिम्मेदारी और सकारात्मक दिशा सामने आए।

चरण 2: विषय-वस्तु का नियोजन पहला अनुच्छेद: अर्थ और व्यापकता। दूसरा अनुच्छेद: कारण और परिणाम। तीसरा अनुच्छेद: व्यवस्था में सुधार। चौथा अनुच्छेद: नागरिक और नैतिक जिम्मेदारी। किसी अप्रमाणित आँकड़े या असंबद्ध प्रसंग के स्थान पर विषय से जुड़े स्पष्ट तर्क रखें। नीचे इसी रूपरेखा पर पूरा नमूना निबंध दिया गया है।

चरण 3: पूर्ण नमूना निबंध **भ्रष्टाचार**

अपने पद, अधिकार या प्रभाव का निजी लाभ के लिए अनुचित उपयोग भ्रष्टाचार है। रिश्वत लेना-देना इसका परिचित रूप है, किंतु पक्षपात, गबन, मिलावट और सार्वजनिक धन की हेराफेरी भी इसी के उदाहरण हैं। यह समस्या केवल कार्यालयों तक सीमित नहीं है; जहाँ ईमानदारी के स्थान पर अनुचित लाभ को महत्व मिलता है, वहाँ भ्रष्टाचार पनपने लगता है।

धन का अत्यधिक लोभ, दिखावे की प्रवृत्ति, जटिल प्रक्रियाएँ और जवाबदेही की कमी इसके प्रमुख कारण हैं। जब दोषियों को दंड मिलने की आशंका कम होती है, तब बेईमानी को बढ़ावा मिलता है। भ्रष्टाचार से योजनाओं का धन जरूरतमंदों तक नहीं पहुँचता और साधारण काम के लिए भी लोगों को परेशानी उठानी पड़ती है। योग्य व्यक्ति अवसर से वंचित होता है तथा नागरिकों का व्यवस्था पर विश्वास घटता है।

इस समस्या से निपटने के लिए नियम स्पष्ट और सेवाओं की प्रक्रिया सरल होनी चाहिए। काम पूरा करने की समय-सीमा तय हो, निर्णयों का विवरण उपलब्ध हो और शिकायतों का निष्पक्ष निपटारा किया जाए। सार्वजनिक खर्च में पारदर्शिता तथा स्वतंत्र जाँच व्यवस्था जरूरी है। दोषी चाहे कितना भी प्रभावशाली हो, उसके विरुद्ध उचित कार्रवाई होनी चाहिए। तकनीक उपयोगी है, पर उसके साथ उत्तरदायित्व भी आवश्यक है।

भ्रष्टाचार मिटाने का दायित्व केवल सरकार का नहीं है। नागरिक अनुचित लाभ के लिए रिश्वत देने से बचें, नियमों का पालन करें और सुरक्षित वैधानिक माध्यमों से शिकायत करें। परिवार तथा विद्यालय ईमानदारी को व्यवहार का मूल्य बनाएँ। धन के प्रदर्शन के बजाय श्रम और चरित्र को सम्मान मिले। कानून, जागरूकता और नैतिक साहस के संयुक्त प्रयास से ही समाज में ईमानदारी की संस्कृति विकसित होगी।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार 'भ्रष्टाचार' विषय का निबंध भूमिका, संगत तर्कों और रचनात्मक उपसंहार के साथ पूर्ण होता है।

त्वरित सुझाव: 'भ्रष्टाचार' पर लिखते समय पहले चार अनुच्छेदों की रूपरेखा बना लें और हर अनुच्छेद को केवल उसके मुख्य विचार पर केंद्रित रखें।

---

4. उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदा के कारण यातायात व्यवस्था की अस्त-व्यस्तता के कारण आप क-ख-ग महाविद्यालय देहरादून में होने वाले साक्षात्कार में उपस्थित नहीं हो पाए । महाविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी को पत्र लिखकर किसी अन्य तिथि को साक्षात्कार का अवसर देने की प्रार्थना कीजिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, विषय-वस्तु और हस्ताक्षर क्रम से लिखे जाते हैं।
- प्रार्थना का आधार प्राकृतिक आपदा के कारण बाधित यातायात है। भाषा विनम्र, स्पष्ट और तथ्यपरक होनी चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषय तय कीजिए यह पत्र क-ख-ग महाविद्यालय, देहरादून के प्रशासनिक अधिकारी को संबोधित होगा। विषय में किसी अन्य तिथि पर साक्षात्कार का अवसर माँगने की बात स्पष्ट करनी है। अपनी अनुपस्थिति का कारण बताते हुए महाविद्यालय के निर्णय के अनुसार उपस्थित होने की तत्परता व्यक्त करनी चाहिए।

चरण 2: विषय-वस्तु की योजना बनाइए आरंभ में निर्धारित साक्षात्कार का संदर्भ दें। फिर बताएँ कि उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदा के कारण मार्ग अवरुद्ध होने और यातायात अस्त-व्यस्त होने से समय पर पहुँच पाना संभव नहीं हुआ। अपनी रुचि स्पष्ट करके नई तिथि देने की प्रार्थना करें। कोई असंबद्ध शिकायत या प्रशासन पर आरोप न लगाएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 24, नेहरू नगर

हरिद्वार, उत्तराखंड
दिनांक : 18 जुलाई, 2014
सेवा में,
प्रशासनिक अधिकारी
क-ख-ग महाविद्यालय
देहरादून, उत्तराखंड
विषय : किसी अन्य तिथि पर साक्षात्कार का अवसर देने हेतु प्रार्थना।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि आपके महाविद्यालय में आयोजित साक्षात्कार के लिए मुझे आमंत्रित किया गया था। मैं उसमें सम्मिलित होने के लिए पूरी तरह तैयार था, किंतु उत्तराखंड में आई प्राकृतिक आपदा के कारण यातायात व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो गई। अनेक मार्ग अवरुद्ध हो गए और परिवहन सेवाएँ बाधित रहीं। इस कारण भरसक प्रयास करने पर भी मैं निर्धारित तिथि को देहरादून नहीं पहुँच सका।
यह अनुपस्थिति मेरी इच्छा अथवा लापरवाही के कारण नहीं, बल्कि अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण हुई। आपके प्रतिष्ठित महाविद्यालय से जुड़ने का अवसर मेरे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मेरी परिस्थिति पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करके मुझे किसी अन्य तिथि पर साक्षात्कार में उपस्थित होने का अवसर प्रदान करें। मैं महाविद्यालय द्वारा निर्धारित नई तिथि और समय पर उपस्थित होने का पूरा प्रयास करूँगा।
आपकी कृपा के लिए आभारी रहूँगा।
धन्यवाद।
भवदीय
अभय कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में आपदा से उत्पन्न विवशता स्पष्ट करते हुए प्रशासनिक अधिकारी से नई तिथि पर साक्षात्कार का अवसर देने का विनम्र अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: विषय में माँगा गया अवसर स्पष्ट लिखें और मुख्य अनुच्छेद में अनुपस्थिति का वास्तविक कारण तथा नई तिथि पर आने की तत्परता जोड़ें।

अथवा

4. सामान्य नागरिक के प्रतिदिन उपयोग की वस्तुओं की महँगाई पर चिन्ता व्यक्त करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखे पत्र का उद्देश्य किसी सार्वजनिक समस्या की ओर समाज और शासन का ध्यान आकर्षित करना है।
- महँगाई के प्रभाव, उसके सामाजिक पक्ष और व्यावहारिक समाधान संक्षेप में प्रस्तुत किए जाने चाहिए।

चरण 1: औपचारिक ढाँचा निर्धारित कीजिए प्रेषक का पता और दिनांक लिखकर संपादक तथा समाचार-पत्र का पता दें। विषय में दैनिक उपयोग की वस्तुओं की बढ़ती कीमतों पर चिंता व्यक्त करें। संबोधन के बाद समस्या, प्रभाव और सुझावों के लिए अलग अनुच्छेद रखें। अंत में धन्यवाद, भवदीय और प्रेषक का नाम दें।

चरण 2: तर्क और सुझाव चुनिए खाद्यान्न, दाल, तेल, दूध और सब्जियों के बढ़ते दामों से सीमित आय वाले परिवारों के बजट पर पड़ने वाला दबाव बताएँ। महँगाई के कारण पौष्टिक भोजन और आवश्यक खर्चों में कटौती का उल्लेख करें। जमाखोरी पर नियंत्रण, उचित मूल्य की दुकानों की निगरानी और मूल्य-सूचना की पारदर्शिता जैसे उपाय सुझाएँ।

चरण 3: पूर्ण आदर्श पत्र 35, शांति विहार

नई दिल्ली

दिनांक : 18 जुलाई, 2014

सेवा में,

संपादक महोदय

दैनिक जनवाणी

नई दिल्ली

विषय : दैनिक उपयोग की वस्तुओं की बढ़ती महँगाई पर चिंता।

महोदय,

आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं संबंधित अधिकारियों का ध्यान सामान्य नागरिक के दैनिक उपयोग की वस्तुओं की बढ़ती कीमतों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आटा, दाल, चावल, तेल, दूध और सब्जियों की महँगाई ने परिवारों का मासिक बजट बिगाड़ दिया है। सीमित आय वाले लोगों के लिए आवश्यक वस्तुएँ खरीदना भी कठिन होता जा रहा है।

इस स्थिति का सबसे अधिक प्रभाव निम्न और मध्यम आय वर्ग पर पड़ रहा है। परिवार पौष्टिक भोजन, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी खर्चों में कटौती करने को विवश हैं। आय में पर्याप्त वृद्धि न होने से उनकी कठिनाइयाँ और बढ़ गई हैं।

सरकार को आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुचारु रखनी चाहिए। जमाखोरी और कालाबाजारी पर प्रभावी कार्रवाई हो तथा उचित मूल्य की दुकानों की नियमित जाँच की जाए। बाजारों में मूल्य-सूची प्रदर्शित करने और बिचौलियों की अनावश्यक भूमिका घटाने से भी राहत मिल सकती है।

कृपया इस समस्या को अपने समाचार-पत्र में प्रमुखता देकर जनहित में आवश्यक कदम उठाने की माँग करें।

धन्यवाद।

भवदीय

अभय कुमार

चरण 4: निष्कर्ष संपादक को पत्र में दैनिक वस्तुओं की महँगाई से आम नागरिक की कठिनाइयों और मूल्य-नियंत्रण के व्यावहारिक उपायों को प्रमुखता दी गई है।

त्वरित सुझाव: संपादक को पत्र में निजी परेशानी के साथ सार्वजनिक प्रभाव और दो-तीन ठोस उपाय लिखें; पूरा औपचारिक प्रारूप अवश्य रखें।

5(क)(i). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

छापेखाने का आविष्कारक कौन था ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम का विकास छापाखाने की तकनीक से जुड़ा है।
- पाठ्यपुस्तक के संदर्भ में आधुनिक छापाखाने के आविष्कार का श्रेय योहान गुटेनबर्ग को दिया जाता है।

चरण 1: पूछे गए तथ्य की पहचान प्रश्न में छापाखाने के आविष्कारक का नाम पूछा गया है। उत्तर में किसी समाचार-पत्र के संस्थापक या भारत के प्रथम मुद्रक का नाम नहीं देना है। यहाँ आधुनिक मुद्रण-प्रणाली के विकास से संबद्ध व्यक्ति अपेक्षित है।

चरण 2: सटीक उत्तर लिखिए जर्मनी के योहान गुटेनबर्ग ने आधुनिक छापाखाने का आविष्कार किया था। उनके नाम का स्पष्ट उल्लेख ही इस प्रश्न का मुख्य उत्तर है।

चरण 3: निष्कर्ष छापाखाने के आविष्कारक योहान गुटेनबर्ग थे।

त्वरित सुझाव: छापाखाने का नाम पढ़ते ही गुटेनबर्ग याद करें; इसे किसी समाचार-पत्र के संपादक या संस्थापक के नाम से न मिलाएँ।

5(क)(ii). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

मुद्रित माध्यम की दो उल्लेखनीय विशेषताएँ लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित सामग्री पाठक के पास लिखित रूप में उपलब्ध रहती है।
- पठन की गति तथा सामग्री को दोबारा पढ़ने का निर्णय पाठक स्वयं करता है।

चरण 1: पहली विशेषता स्पष्ट कीजिए मुद्रित माध्यम में पाठक अपनी सुविधा और गति से पढ़ सकता है। वह किसी कठिन अंश पर रुक सकता है और आवश्यकता होने पर उसे बार-बार पढ़ सकता है; सामग्री के प्रवाह पर उसका नियंत्रण रहता है।

चरण 2: दूसरी विशेषता स्पष्ट कीजिए मुद्रित सामग्री को सुरक्षित रखकर भविष्य में संदर्भ के लिए उपयोग किया जा सकता है। समाचार-पत्र की कतरन, पत्रिका या पुस्तक को सँभालकर बाद में उसमें दी गई सूचना फिर देखी जा सकती है।

चरण 3: निष्कर्ष मुद्रित माध्यम की दो विशेषताएँ हैं : अपनी गति से बार-बार पढ़ने की सुविधा और सामग्री को भविष्य के संदर्भ के लिए सुरक्षित रखने की सुविधा।

त्वरित सुझाव: दो विशेषताएँ अलग लिखें : पहली पाठक की गति और पुनर्पठन से, दूसरी सामग्री के संग्रह और भविष्य के संदर्भ से संबंधित हो।

5(क)(iii). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

'एंकर बाइट' किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में एंकर का कथन और संबंधित व्यक्ति का मूल वक्तव्य मिलाकर समाचार प्रस्तुत किया जाता है।
- बाइट समाचार से जुड़े व्यक्ति की आवाज में उसके कथन का संक्षिप्त अंश होता है।

चरण 1: प्रस्तुति का क्रम समझिए एंकर पहले समाचार की जानकारी देता है। इसके बाद उसी विषय से संबंधित व्यक्ति की प्रतिक्रिया या कथन का छोटा अंश सुनाया अथवा दिखाया जाता है। इससे दर्शक को संबंधित व्यक्ति का अपना पक्ष सुनने को मिलता है।

चरण 2: परिभाषा लिखिए जब एंकर द्वारा समाचार बताए जाने के बाद उससे संबंधित व्यक्ति का कथन या प्रतिक्रिया उसकी अपनी आवाज में प्रसारित की जाती है, तो इस समाचार-प्रस्तुति को एंकर बाइट कहते हैं। बाइट एंकर की निजी राय नहीं होती।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर द्वारा समाचार देने के बाद उससे जुड़े व्यक्ति का कथन या प्रतिक्रिया उसकी अपनी आवाज में प्रस्तुत करना एंकर बाइट कहलाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में दोनों भाग रखें : पहले एंकर का समाचार, फिर संबंधित व्यक्ति की अपनी आवाज में कथन या प्रतिक्रिया।

5(क)(iv). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

इंटरनेट-पत्रकारिता के विभिन्न नाम क्या हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट के माध्यम से समाचारों का संकलन, संपादन, प्रकाशन और प्रसार इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है।
- इसके अलग-अलग प्रचलित नाम एक ही डिजिटल समाचार माध्यम को सूचित करते हैं।

चरण 1: माध्यम की पहचान इस पत्रकारिता में समाचार पाठकों तक इंटरनेट से जुड़े कंप्यूटर अथवा अन्य डिजिटल उपकरणों पर पहुँचते हैं। इसलिए इसके नामों में इंटरनेट, वेब और ऑनलाइन जैसे शब्द आते हैं।

चरण 2: प्रचलित नाम लिखना इंटरनेट पत्रकारिता को ऑनलाइन पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता तथा ई-पत्रकारिता भी कहते हैं। ये नाम इसके इंटरनेट आधारित स्वरूप के कारण प्रचलित हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट पत्रकारिता के विभिन्न नाम हैं—ऑनलाइन पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता और ई-पत्रकारिता।

त्वरित सुझाव: उत्तर में माध्यम का वर्णन बढ़ाने के बजाय ऑनलाइन, वेब, साइबर और ई-पत्रकारिता जैसे प्रचलित नाम स्पष्ट लिखें।

5(क)(v). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

फ्रीलांसर पत्रकार किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण किसी समाचार संस्था से उनके कार्य-संबंध के आधार पर भी किया जाता है।
- फ्रीलांसर का अर्थ स्वतंत्र रूप से लेखन अथवा पत्रकारिता करने वाला व्यक्ति है।

चरण 1: स्वतंत्र कार्य-संबंध समझना फ्रीलांसर पत्रकार किसी एक समाचार-पत्र, पत्रिका या समाचार संस्था का स्थायी वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता। वह स्वतंत्र रूप से विषय चुनकर अथवा किसी संस्था के अनुरोध पर पत्रकारिता का कार्य करता है।

चरण 2: उसके कार्य का स्वरूप बताना वह विभिन्न समाचार संस्थाओं के लिए समाचार, लेख, फीचर या रिपोर्ट तैयार करता है। प्रकाशित अथवा स्वीकृत सामग्री के बदले उसे सामान्यतः पारिश्रमिक मिलता है। इस प्रकार उसकी पहचान स्वतंत्र पत्रकार के रूप में होती है।

चरण 3: निष्कर्ष जो पत्रकार किसी एक समाचार संस्था का स्थायी कर्मचारी बने बिना विभिन्न संस्थाओं के लिए स्वतंत्र रूप से समाचार या लेख आदि लिखता है, उसे फ्रीलांसर अथवा स्वतंत्र पत्रकार कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में दो बातें अवश्य जोड़ें—एक संस्था की स्थायी नौकरी नहीं और अलग-अलग संस्थाओं के लिए स्वतंत्र पत्रकारिता।

5(ख). 'महँगी होती उपचार-व्यवस्था' विषय पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सार्वजनिक विषय पर तथ्यपरक, तर्कपूर्ण और क्रमबद्ध विचार प्रस्तुत करता है।
- प्रभावी आलेख में उपयुक्त शीर्षक, लेखक का नाम, समस्या का विवेचन और व्यावहारिक समाधान होते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विचार-क्रम विषय के अनुरूप शीर्षक तथा लेखक का नाम दें। भूमिका में उपचार की बढ़ती लागत की समस्या रखें। फिर उसके कारण, सामान्य परिवारों पर प्रभाव और सरकारी तथा सामाजिक उपाय प्रस्तुत करें। भाषा स्पष्ट और संतुलित रखें।

चरण 2: संपूर्ण नमूना आलेख महँगी होती उपचार-व्यवस्था

लेखक : अजय कुमार

स्वास्थ्य मनुष्य की मूल आवश्यकता है, किंतु आज बीमारी के साथ इलाज के खर्च की चिंता भी जुड़ गई है। चिकित्सक की फीस, जाँच, दवाएँ और अस्पताल में भर्ती होने का खर्च मिलकर साधारण परिवार का बजट बिगाड़ देते हैं। गंभीर बीमारी की स्थिति में कई परिवारों को बचत खर्च करनी पड़ती है या कर्ज लेना पड़ता है।

इस महँगाई के अनेक कारण हैं। सरकारी अस्पतालों में भीड़ और सुविधाओं की कमी के कारण रोगी निजी अस्पतालों का रुख करते हैं। वहाँ महँगी तकनीक, अधिक शुल्क और कभी-कभी अनावश्यक जाँचें खर्च बढ़ाती हैं। दूर रहने वाले रोगियों पर यात्रा और ठहरने का

अतिरिक्त बोझ पड़ता है। बीमारी के दौरान कमाई बंद हो जाए तो संकट और गहरा जाता है।

स्वास्थ्य सेवा को सबकी पहुँच में लाने के लिए सार्वजनिक अस्पतालों को मजबूत करना आवश्यक है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर चिकित्सक, जरूरी दवाएँ और बुनियादी जाँच नियमित रूप से उपलब्ध हों। सस्ती गुणवत्तापूर्ण दवाओं का उपयोग बढ़े तथा अस्पतालों के शुल्क पारदर्शी हों। जरूरतमंद परिवारों को प्रभावी आर्थिक सुरक्षा मिले और शिकायतों पर समय से कार्रवाई हो।

स्वच्छता, पोषण, टीकाकरण और समय पर जाँच से कई रोगों को रोका जा सकता है। फिर भी बचाव के नाम पर उपचार उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी कम नहीं होती। शासन, चिकित्सा संस्थानों और समाज के साझा प्रयासों से ही ऐसी व्यवस्था बनेगी जिसमें धन के अभाव में किसी रोगी का इलाज न रुके।

चरण 3: निष्कर्ष सुलभ उपचार के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, उचित शुल्क, सस्ती दवाएँ और जरूरतमंदों की आर्थिक सुरक्षा आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: आलेख में खर्च बढ़ने के कारणों को उनके प्रभाव और उपायों से जोड़ें; बिना प्रमाण के आँकड़े लिखने से बचें।

अथवा

5(ख). 'आवश्यक सुविधाओं से वंचित गाँव' विषय पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक विषय पर आलेख लिखते समय समस्या, उसके प्रभाव और समाधान को क्रम से जोड़ना चाहिए।
- गाँव की आवश्यक सुविधाओं में पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क, बिजली और संचार शामिल हैं।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना सार्थक शीर्षक और लेखक का नाम देकर ग्रामीण जीवन में बुनियादी सुविधाओं के महत्त्व से आरंभ करें। सुविधा के अभाव का जीवन पर प्रभाव बताएँ और अंत में स्थानीय भागीदारी तथा उत्तरदायी प्रशासन से जुड़े उपाय रखें।

चरण 2: संपूर्ण नमूना आलेख आवश्यक सुविधाओं से वंचित गाँव

लेखक : अजय कुमार

गाँव देश के सामाजिक और आर्थिक जीवन का महत्त्वपूर्ण आधार हैं। फिर भी अनेक गाँवों में लोगों को स्वच्छ पेयजल, अच्छी सड़क, नियमित बिजली और पर्याप्त स्वास्थ्य सेवाओं के लिए संघर्ष करना पड़ता है। विकास का वास्तविक अर्थ तभी पूरा होगा जब ये सुविधाएँ प्रत्येक ग्रामीण परिवार तक पहुँचेंगी।

पानी की कमी से लोगों का समय और श्रम नष्ट होता है। दूषित जल बीमारियाँ बढ़ाता है। स्वास्थ्य केंद्र में चिकित्सक और दवाएँ उपलब्ध न हों तो रोगी को दूर शहर ले जाना पड़ता है। खराब सड़कें इस यात्रा को और कठिन बना देती हैं। विद्यालय में शिक्षक, पुस्तकालय और आवश्यक साधनों की कमी बच्चों के सीखने के अवसर घटाती है। अनियमित बिजली तथा कमजोर संचार व्यवस्था पढ़ाई, खेती और छोटे व्यवसायों पर भी असर डालती है।

इन अभावों का परिणाम केवल असुविधा नहीं है। रोजगार के सीमित अवसर और बेहतर जीवन की आशा युवाओं को शहरों की ओर ले जाते हैं। पीछे रह गए परिवारों की कठिनाइयाँ बढ़ती हैं। इसलिए ग्रामीण विकास को केवल घोषणाओं तक सीमित रखना उचित नहीं है।

प्रत्येक गाँव की जरूरतों के अनुसार योजनाएँ बननी चाहिए। सुरक्षित पानी, प्राथमिक स्वास्थ्य, गुणवत्तापूर्ण विद्यालय और सुगम सड़क को प्राथमिकता मिले। पंचायतों को पर्याप्त संसाधन तथा स्पष्ट जिम्मेदारी दी जाए। ग्रामसभा में खर्च और प्रगति की समीक्षा हो, ताकि काम की गुणवत्ता बनी रहे। स्थानीय रोजगार और डिजिटल सुविधाएँ भी बढ़ाई जाएँ।

गाँवों की उन्नति दया का विषय नहीं, समान अवसर का प्रश्न है। प्रशासन और ग्रामीण समाज मिलकर काम करें तो सुविधासंपन्न गाँव देश की प्रगति का मजबूत आधार बन सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष गाँवों में आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए जरूरत के अनुसार योजनाएँ, गुणवत्तापूर्ण सार्वजनिक सेवाएँ, स्थानीय रोजगार और ग्रामसभा की सक्रिय निगरानी जरूरी हैं।

त्वरित सुझाव: हर अभाव के साथ उसका सीधा प्रभाव बताएँ—जैसे खराब सड़क से उपचार में देरी—और फिर उसी का व्यावहारिक उपाय लिखें।

6. 'सिर उठाती सांप्रदायिकता' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर सामाजिक विषय की रोचक, संवेदनशील और विचारपूर्ण प्रस्तुति है। इसमें शीर्षक, जीवंत आरंभ, मानवीय प्रभाव तथा सार्थक अंत होना चाहिए।
- सांप्रदायिकता धर्म के आधार पर दूसरे समुदाय के प्रति अविश्वास और घृणा फैलाती है। आस्था का सम्मान और सांप्रदायिकता का विरोध साथ संभव हैं।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना शीर्षक और लेखक के नाम के बाद किसी परिचित दृश्य से आरंभ करें। समस्या के कारण, सामान्य नागरिक पर प्रभाव और सौहार्द के उपाय प्रस्तुत करें। भाषा संयत रहे और किसी समुदाय पर दोषारोपण न हो। पूरे आलेख को मानवीय सरोकार तथा सामाजिक एकता से जोड़ें।

चरण 2: पूर्ण फ़ीचर का आलेख सिर उठाती सांप्रदायिकता

लेखक : एक जागरूक नागरिक

कल तक एक ही गली में त्योहारों की मिठाइयाँ बाँटने वाले पड़ोसी आज एक अफ़वाह सुनकर एक-दूसरे को संदेह से देखने लगें, तो चिंता स्वाभाविक है। सांप्रदायिकता सबसे पहले इसी भरोसे को नष्ट करती है। घरों की दीवारें सुरक्षित दिखती हैं, किंतु मनों के बीच दीवारें खड़ी होने लगती हैं।

भारत की पहचान उसकी विविधता और साझी संस्कृति है। मंदिर की घंटी और मस्जिद की अज़ान के बीच सदियों से जीवन आगे बढ़ता आया है। फिर धर्म के नाम पर नफ़रत क्यों? संकीर्ण राजनीति, अधूरी जानकारी और स्वार्थपूर्ण प्रचार इस आग को हवा देते हैं। बिना सत्यापन के फैलाई गई बातें साधारण मतभेद को भय और हिंसा में बदल सकती हैं।

इसका सबसे अधिक मूल्य सामान्य नागरिक चुकाते हैं। दुकान बंद होने से परिवार की कमाई रुकती है, बच्चों की पढ़ाई छूटती है और मेहनतकश का रोज़गार छिनता है। किसी माँ के आँसू या किसी बच्चे का भय धर्म देखकर अलग नहीं हो जाता। हिंसा अंततः मनुष्यता को ही पराजित करती है। सामाजिक तनाव व्यापार, शिक्षा और रोज़मर्रा के सहयोग को भी कमजोर करता है।

समाधान केवल अपीलों से नहीं निकलेगा। विद्यालयों में संवाद और संवैधानिक मूल्यों की शिक्षा हो; प्रशासन भेदभाव के बिना कार्रवाई करे और नागरिक अफ़वाह की जाँच करें। साझा सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा पड़ोसियों के बीच संपर्क विश्वास बढ़ा सकते हैं। युवाओं को उकसावे से बचाकर रचनात्मक कार्यों में जोड़ना भी आवश्यक है।

अपनी आस्था का सम्मान करते हुए दूसरे की आस्था और अधिकारों की रक्षा करना सच्ची नागरिकता है। सांप्रदायिकता का सिर तभी झुकेगा जब मनुष्यता का सिर ऊँचा होगा।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर सांप्रदायिकता के कारणों और मानवीय दुष्परिणामों को सामने रखकर संवाद, विवेक तथा समान अधिकारों की रक्षा का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: फ़ीचर को किसी जीवंत दृश्य से शुरू करें और अंत में सामाजिक समस्या के समाधान का स्पष्ट संदेश दें।

अथवा

6. 'अंधविश्वास के पसरते पाँव' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर में तथ्य, संवेदना और रोचक प्रस्तुति का मेल होता है; विषय के कारण, परिणाम तथा समाधान सहज ढंग से उभरते हैं।
- अंधविश्वास वह धारणा है जिसे बिना तर्क, प्रमाण या जाँच के सच मान लिया जाए। उसका विरोध करते हुए प्रश्नशीलता और विवेक का समर्थन करें।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना आकर्षक शीर्षक तथा लेखक का नाम दें। दैनिक अनुभव से आरंभ कर भय, असुरक्षा और

चमत्कार के आकर्षण की चर्चा करें। स्वास्थ्य एवं आर्थिक शोषण पर प्रभाव दिखाएँ। वैज्ञानिक दृष्टि के प्रसार के उपाय देकर प्रेरक अंत करें। भाषा सरल और दृष्टिकोण संवेदनशील रखें।

चरण 2: पूर्ण फ़ीचर का आलेख अंधविश्वास के पसरते पाँव

लेखक : एक जागरूक नागरिक

परीक्षा में सफलता के लिए पढ़ाई छोड़कर चमत्कारी ताबीज़ ढूँढ़ता विद्यार्थी और बीमारी के इलाज के बदले झाड़-फूँक कराता परिवार—ये दृश्य सोचने पर मजबूर करते हैं। विज्ञान की उपलब्धियों से भरे समय में भी अंधविश्वास हमारे निर्णयों पर पकड़ क्यों बनाए हुए है?

जीवन की अनिश्चितता मनुष्य को डराती है। बीमारी, बेरोज़गारी या असफलता के समय तुरंत समाधान पाने की इच्छा प्रबल हो जाती है। इसी कमजोरी का लाभ उठाकर कुछ लोग चमत्कार और भाग्य बदलने का दावा करते हैं। सुनी-सुनाई बात जब बिना जाँच बार-बार दोहराई जाती है, तो वह कई लोगों को सत्य जैसी लगने लगती है। शिक्षित व्यक्ति भी भय के कारण ऐसे जाल में फँस सकता है।

अंधविश्वास केवल निजी आदत नहीं रहता। इलाज में देरी से रोग बढ़ सकता है, कठिन परिश्रम की कमाई ठगी में जा सकती है और किसी निर्दोष पर अनिष्ट फैलाने का आरोप लग सकता है। डर पर टिका विश्वास मनुष्य से प्रश्न पूछने और सही सहायता लेने का साहस छीनता है। ऐसे में परिवार की आशाएँ और संसाधन दोनों संकट में पड़ते हैं।

आस्था का निजी स्थान हो सकता है, पर किसी दावे की सत्यता प्रमाण से परखी जानी चाहिए। विद्यालयों में प्रयोग, चर्चा और प्रश्न पूछने को बढ़ावा देना आवश्यक है। परिवार बच्चों की जिज्ञासा दबाने के बजाय उत्तर खोजें। संचार माध्यम चमत्कार का सनसनीखेज प्रचार करने के स्थान पर दावों की पड़ताल करें। बीमारी में योग्य चिकित्सक और संकट में उचित विशेषज्ञ की सहायता लेना समझदारी है।

बदलाव की शुरुआत एक सरल प्रश्न से हो सकती है—इस बात का प्रमाण क्या है? जब भय की जगह विवेक और निष्क्रिय प्रतीक्षा की जगह प्रयास आएँगे, तभी अंधविश्वास के पसरते पाँव रुकेंगे।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर अंधविश्वास से होने वाले शोषण को सामने रखता है तथा शिक्षा, प्रश्नशीलता और प्रमाण आधारित निर्णय का समर्थन करता है।

त्वरित सुझाव: अंधविश्वास पर केवल उदाहरण न गिनाएँ; उन्हें सामाजिक नुकसान और विवेकपूर्ण समाधान से जोड़कर फ़ीचर विकसित करें।

---

7. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता ।
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ ।

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

7(क). संसार के साथ कवि का किस प्रकार का नाता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश कवि के जीवन-मूल्यों और संसार की भौतिक प्राथमिकताओं का अंतर बताता है। उत्तर इसी अंतर पर आधारित होना चाहिए।
- संसार वैभव जोड़ता है और कवि उस आकर्षण को ठुकराता है। ये विपरीत क्रियाएँ दोनों के संबंध का कारण स्पष्ट करती हैं।

चरण 1: नाते का स्वरूप कवि और संसार की रुचियों तथा दृष्टिकोण में मेल नहीं है। वह अपने को जग से भिन्न अनुभव करता है, इसलिए सांसारिक जीवन-मूल्यों से उसका आत्मीय नाता नहीं बन पाता। कविता में कहाँ का नाता कहना इस मानसिक दूरी की अभिव्यक्ति है।

चरण 2: भिन्नता का कारण संसार पृथ्वी पर धन-संपत्ति और वैभव जोड़ने में लगा है, जबकि कवि भौतिक आकर्षण को ठुकराता है।

वह अपनी अनुभूतियों और कल्पनाओं के अनुसार अपना आंतरिक संसार रचता है। दोनों की प्राथमिकताएँ अलग हैं, इसलिए उनके बीच सहज सामंजस्य नहीं है। यह दूरी कवि की भौतिक वैभव के प्रति अनासक्ति से उत्पन्न होती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का संसार से विचारों और जीवन-मूल्यों का मेल नहीं है, क्योंकि संसार वैभव-संचय को महत्त्व देता है और कवि अपने स्वतंत्र भाव-जगत को।

त्वरित सुझाव: पहले नाते की भिन्नता बताएँ, फिर वैभव जोड़ने और उसे ठुकराने की पंक्तियों से उसका कारण जोड़ें।

7(ख). 'जग बनाने और मिटाने' से कवि का क्या आशय है ? वह किस रूप में जग की रचना करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जग यहाँ मन में बसने वाले भावों, स्वप्नों और कल्पनाओं के संसार का संकेत है।
- बनाना और मिटाना सृजनशील मन की सक्रियता दिखाते हैं। इन्हें वास्तविक पृथ्वी के निर्माण या विनाश के अर्थ में नहीं लेना चाहिए।

चरण 1: जग बनाने और मिटाने का आशय कवि अपने मन में भावनाओं, इच्छाओं और कल्पनाओं के अनेक संसार रचता है। अनुभूति बदलने पर वह पुराने भाव-जगत को छोड़कर नया जग बना लेता है। इस प्रकार बनाने और मिटाने का अर्थ नई कल्पनाओं का निर्माण तथा पुरानी कल्पनाओं का विसर्जन है।

चरण 2: रचना का रूप कवि अपनी संवेदनाओं तथा स्वप्नों को कविता का रूप देकर नए जग की रचना करता है। उसकी रचनाओं में अनुभूत जीवन और कल्पना नया भाव-संसार बनाते हैं। यह धन और भवनों से बनने वाला बाहरी संसार नहीं, उसकी आंतरिक सृजनशीलता का संसार है। रोज़ नए जग रचने की बात उसकी निरंतर सक्रिय कल्पनाशक्ति को स्पष्ट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि मन में कल्पना और अनुभूति के संसार रचता तथा बदलता रहता है और उन्हें कविता के रूप में अभिव्यक्ति देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों बातें स्पष्ट रखें—कल्पना में जग बनना-मिटना और उस भाव-जगत का कविता में साकार होना।

7(ग). वैभवशाली पृथ्वी से भी कवि का लगाव क्यों नहीं है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में पृथ्वी धन, वैभव और भौतिक संचय का आधार है। कवि उसके आकर्षण से मुक्त रहना चाहता है।
- संसार के वैभव जोड़ने और कवि के उसे ठुकराने का विरोध उसके मूल्यबोध को स्पष्ट करता है।

चरण 1: वैभवशाली पृथ्वी का आशय संसार के लोग इसी पृथ्वी पर संपत्ति जोड़ते हैं और उसे जीवन की उपलब्धि मानते हैं। पृथ्वी का वैभव यहाँ भौतिक सुख-साधनों तथा धन-संपदा का प्रतीक है। कवि का लगाव न होने का अर्थ प्रकृति से घृणा नहीं, बल्कि संपत्ति के मोह से दूरी है।

चरण 2: अनासक्ति का कारण कवि अपने मन की स्वतंत्रता, संवेदनाओं और कल्पना को अधिक महत्त्व देता है। धन-संचय उसके जीवन का लक्ष्य नहीं है, इसलिए वैभव का आकर्षण उसे बाँध नहीं पाता। प्रति पग ठुकराने की अभिव्यक्ति उसकी अनासक्ति की दृढ़ता दिखाती है। वह सांसारिक संपत्ति को अपने जीवन का मापदंड स्वीकार नहीं करता और अपने रचे भाव-जगत को अधिक प्रिय मानता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का वैभवशाली पृथ्वी से लगाव इसलिए नहीं है कि वह भौतिक धन-संपत्ति के मोह से मुक्त है और अपने स्वतंत्र भाव-जगत को अधिक महत्त्व देता है।

त्वरित सुझाव: पृथ्वी को वैभव-संचय का प्रतीक समझें; उत्तर को प्रकृति से विरक्ति में न बदलें और भौतिक मोह से दूरी स्पष्ट करें।

7(घ). 'रोदन में राग' और 'शीतल वाणी में आग' से कवि क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि अपने व्यक्तिगत दुःख और अपनी वाणी की संवेदनशीलता में छिपे जीवन-संगीत तथा विद्रोह को व्यक्त करता है।
- उत्तर में पद्यांश के शब्दों के आधार पर आशय स्पष्ट करना चाहिए और प्रतीक तथा वास्तविक स्थिति का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 1: रोदन में राग का आशय रोदन दुःख और वेदना का सूचक है, जबकि राग संगीत, प्रेम और आनंद का। कवि के जीवन में पीड़ा है, फिर भी वह उसके भीतर प्रेम और जीवन का संगीत सँजोए हुए है। उसका रोना केवल निराशा की अभिव्यक्ति नहीं रह जाता; वही संवेदनशील काव्य का रूप ले लेता है। दुःख के अनुभव से उसके गीतों की आत्मीयता और गहराई उत्पन्न होती है।

चरण 2: शीतल वाणी में आग का आशय कवि की वाणी सुनने में शांत, मधुर और कोमल है, पर उसके भीतर अन्याय तथा सांसारिक जड़ता के विरुद्ध तीव्र विद्रोह छिपा है। आग इस आंतरिक क्रांतिकारी चेतना और आवेग का प्रतीक है। वह कोमल अभिव्यक्ति के माध्यम से भी प्रखर अनुभूतियाँ व्यक्त करता है। इस प्रकार दोनों कथनों में विपरीत भावों का सहअस्तित्व उसके व्यक्तित्व की विशेषता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि की वेदना में प्रेम और संगीत है तथा उसकी शांत वाणी में विद्रोह की प्रखर चेतना है।

त्वरित सुझाव: दोनों पदों में पहले बाहरी रूप और फिर भीतर छिपे विपरीत भाव को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

7. आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्र-गर्जन से बादल !
त्रस्त-नयन मुख ढाँप रहे हैं ।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर !
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार ! [8 अंक]

7(क). 'त्रस्त-नयन' कौन हैं ? उनके मुख ढाँपने का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में बादल की गर्जना को सामाजिक क्रांति की चेतावनी और धनिकों की प्रतिक्रिया को उसके भय के रूप में पढ़ना चाहिए।
- उत्तर में पद्यांश के शब्दों के आधार पर आशय स्पष्ट करना चाहिए और प्रतीक तथा वास्तविक स्थिति का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 1: त्रस्त-नयन की पहचान त्रस्त-नयन वे धनी और शोषक लोग हैं जिनकी आँखों में भय समाया हुआ है। पद्यांश में धनी शब्द स्वयं उनकी पहचान करा देता है। वे अपने वैभव और प्रभुत्व की रक्षा को लेकर आशंकित हैं। कवि उनकी स्थिति को आतंक से काँपने और भयभीत नेत्रों से मुख ढाँपने के चित्र द्वारा प्रकट करता है।

चरण 2: मुख ढाँपने का कारण बादल की वज्र जैसी गर्जना उन्हें आने वाली क्रांति का संकेत देती है। उन्हें डर है कि शोषितों का जागरण उनकी शोषण पर आधारित व्यवस्था और संचित वैभव को नष्ट कर देगा। इसीलिए वे आतंकित होकर अपना मुख ढाँपते हैं। यह प्रतिक्रिया केवल मौसम से होने वाला साधारण भय नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन से भयभीत धनिक वर्ग की मानसिकता का चित्रण है।

चरण 3: निष्कर्ष त्रस्त-नयन शोषक धनी हैं; बादल की क्रांतिसूचक गर्जना से अपने वैभव और प्रभुत्व के विनाश की आशंका में वे मुख ढाँपते हैं।

त्वरित सुझाव: पहचान के लिए पद्यांश का धनी शब्द और कारण के लिए गर्जना का क्रांतिकारी अर्थ जोड़िए।

7(ख). कृषक की अधीरता का क्या कारण है ? उसकी शारीरिक दशा पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि कृषक की शारीरिक दुर्बलता को शोषण का परिणाम और बादल के आह्वान को जीवन की आशा के रूप में प्रस्तुत करता है।
- उत्तर में पद्यांश के शब्दों के आधार पर आशय स्पष्ट करना चाहिए और प्रतीक तथा वास्तविक स्थिति का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 1: कृषक की अधीरता का कारण कृषक बादल को इसलिए अधीर होकर बुलाता है कि वर्षा से उसकी खेती और जीवन को नया आधार मिलेगा। अभाव तथा शोषण से त्रस्त उसका जीवन परिवर्तन चाहता है। बादल यहाँ जीवनदायी वर्षा के साथ क्रांति का भी प्रतीक है। अत: किसान की पुकार में आजीविका बचाने की चिंता और शोषण से मुक्ति पाने की उत्कट आकांक्षा दोनों निहित हैं।

चरण 2: शारीरिक दशा का चित्र उसकी बाँहें जीर्ण और उसका शरीर शीर्ण हो गया है। शोषकों ने उसकी मेहनत का फल छीनकर मानो उसके जीवन का सारा रस चूस लिया है। वह इतना दुर्बल और क्षीण है कि शरीर में हड्डियाँ ही शेष दिखाई देती हैं। जीर्ण बाहु, शीर्ण शरीर और हाड़-मात्र जैसे पद उसके अभावग्रस्त, कुपोषित तथा शोषित जीवन का मार्मिक चित्र उपस्थित करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कृषक वर्षा और शोषण से मुक्ति की आशा में अधीर है; निरंतर शोषण से उसका शरीर दुर्बल होकर हड्डियों का ढाँचा रह गया है।

त्वरित सुझाव: अधीरता का कारण बताते समय वर्षा की आवश्यकता और सामाजिक मुक्ति की आशा दोनों जोड़िए।

7(ग). 'विप्लव का वीर' कौन है ? उसके लिए यह सम्बोधन क्यों प्रयुक्त किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल प्रकृति का जीवनदायी तत्त्व होने के साथ अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलने वाली शक्ति का प्रतीक है।
- उत्तर में पद्यांश के शब्दों के आधार पर आशय स्पष्ट करना चाहिए और प्रतीक तथा वास्तविक स्थिति का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 1: विप्लव के वीर की पहचान विप्लव के वीर कहकर कवि ने बादल को संबोधित किया है। विप्लव का अर्थ व्यापक क्रांति या परिवर्तन है। बादल की प्रचंड गर्जना, उसकी शक्ति और उसका निर्भीक रूप उसे ऐसे वीर का स्वरूप देते हैं जो जड़ व्यवस्था को चुनौती देता है। इस संबोधन से प्राकृतिक दृश्य को सामाजिक अर्थ मिल जाता है।

चरण 2: संबोधन का औचित्य बादल की गर्जना से शोषक धनिक भयभीत होते हैं, जबकि शोषित किसान उसे आशा के साथ बुलाता है। इस विपरीत प्रतिक्रिया से स्पष्ट है कि बादल पुरानी शोषणकारी व्यवस्था के विनाश और पीड़ितों के नवजीवन का प्रतीक है। उसकी वर्षा धरती को जीवन देती है और उसकी क्रांतिकारी शक्ति किसान की मुक्ति की आकांक्षा को स्वर देती है। इसी परिवर्तनकारी भूमिका के कारण वह विप्लव का वीर है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल विप्लव का वीर है, क्योंकि वह शोषक व्यवस्था को चुनौती देने वाली क्रांति तथा पीड़ित कृषक के नवजीवन की आशा का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: संबोधन का कारण समझाने के लिए धनी का भय और किसान की आशा आमने-सामने रखिए।

7(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :

'चूस लिया है उसका सार,

हाड़-मात्र ही है आधार' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इन पंक्तियों में कृषक की अत्यधिक क्षीण देह के माध्यम से आर्थिक शोषण की अमानवीयता प्रकट हुई है।
- उत्तर में पद्यांश के शब्दों के आधार पर आशय स्पष्ट करना चाहिए और प्रतीक तथा वास्तविक स्थिति का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 1: सार चूसने का आशय उसका सार चूस लेने का आशय है कि शोषक वर्ग ने किसान के श्रम का फल अपने अधिकार में कर लिया है। निरंतर परिश्रम के बाद भी उसे जीवन की आवश्यक वस्तुएँ और पर्याप्त भोजन नहीं मिलते। इस अन्याय ने उसकी शक्ति, स्फूर्ति और जीवन-रस को समाप्त कर दिया है। कवि आर्थिक शोषण को शरीर का रस चूस लेने के प्रभावशाली बिंब में प्रस्तुत करता है।

चरण 2: हाड़-मात्र आधार का आशय किसान इतना कुपोषित और दुर्बल हो गया है कि उसका शरीर मांसहीन हड्डियों का ढाँचा प्रतीत होता है। हाड़-मात्र से उसकी चरम दीनता और जर्जर अवस्था सामने आती है। जो कृषक अपने श्रम से समाज का पोषण करता है, वही स्वयं पोषण से वंचित है। ये पंक्तियाँ उसके प्रति करुणा जगाने के साथ उस व्यवस्था के प्रति आक्रोश भी व्यक्त करती हैं जो उसकी दुर्दशा के लिए उत्तरदायी है।

चरण 3: निष्कर्ष शोषकों ने कृषक के श्रम और जीवन-शक्ति का दोहन किया है; अभाव और कुपोषण से वह हड्डियों का ढाँचा रह गया है।

त्वरित सुझाव: सार को जीवन-शक्ति और हाड़ को हड्डियाँ समझकर आर्थिक शोषण तथा शारीरिक परिणाम जोड़िए।

---

8. तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।

माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबेको एकु न दैबेको दोऊ ।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [6 अंक]

8(क). अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुप्रास में एक ही व्यंजन वर्ण की आवृत्ति से भाषा में ध्वनि-सौंदर्य उत्पन्न होता है। उदाहरण देते समय दोहराया गया वर्ण भी पहचानना चाहिए।
- उत्तर में पद्यांश के शब्दों के आधार पर आशय स्पष्ट करना चाहिए और प्रतीक तथा वास्तविक स्थिति का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 1: पहला उदाहरण काव्यांश का माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो अनुप्रास का उदाहरण है। माँगि और मसीत में म वर्ण की आवृत्ति हुई है। इस ध्वनि-साम्य से दोनों क्रियात्मक कथनों में लय और संबंध स्थापित होता है। उदाहरण पूरे पदसमूह के साथ लिखने पर पाठ में उसकी स्थिति और दोहराए गए वर्ण की पहचान स्पष्ट रहती है।

चरण 2: दूसरा उदाहरण कहै कछु में क वर्ण की आवृत्ति है। दोनों पास-पास आए शब्दों के आरंभ में समान व्यंजन होने से कथन में ध्वन्यात्मक आकर्षण उत्पन्न हुआ है। ये शब्द इस बात को व्यक्त करते हैं कि जिसे जैसा अच्छा लगे, वह तुलसी के बारे में वैसा कह सकता है। यहाँ अर्थ के साथ ध्वनि का मेल भी काव्य की प्रभावशीलता बढ़ाता है। अनुप्रास की पहचान अर्थ-समानता से नहीं, वर्णों की आवृत्ति से की जाती है।

चरण 3: निष्कर्ष दो उदाहरण हैं: माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो में म वर्ण तथा कहै कछु में क वर्ण की आवृत्ति।

त्वरित सुझाव: उदाहरण के साथ आवृत्त व्यंजन अवश्य लिखिए; केवल तुक मिलने को अनुप्रास न मानिए।

8(ख). काव्यांश के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की भाषा का विवेचन उसकी बोली, शब्द-चयन, लय और कथन की प्रभावशीलता के आधार पर किया जाता है।
- उत्तर में पद्यांश के शब्दों के आधार पर आशय स्पष्ट करना चाहिए और प्रतीक तथा वास्तविक स्थिति का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 1: भाषा और शब्द-चयन काव्यांश की भाषा ब्रजभाषा है। गुलामु, खैबो, सोइबो, एकु और दोऊ जैसे रूप उसे सहज लोकभाषिक स्वर देते हैं। मसीत और गुलामु जैसे प्रचलित अरबी-फारसी मूल के शब्द भाषा की व्यापकता और लोक-संपर्क दिखाते हैं। कठिन पांडित्य के स्थान पर साधारण जन की बोलचाल से जुड़े शब्दों द्वारा कवि अपनी बात सीधे और प्रभावशाली ढंग से कहता है।

चरण 2: शैली और ध्वनि-सौंदर्य कथन में निर्भीकता, स्पष्टता और फक्कड़पन है। माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो जैसे समानांतर पदबंध लय उत्पन्न करते हैं। कहै कछु में क और माँगि-मसीत में म की आवृत्ति अनुप्रास का सौंदर्य देती है। लैबेको एकु न दैबेको दोऊ जैसा लोकप्रचलित मुहावरेदार कथन सांसारिक लेन-देन से निर्लिप्तता को चुटीले और सघन रूप में व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सहज ब्रजभाषा, लोकप्रचलित शब्दावली, मुहावरेदार कथन, अनुप्रास तथा लय काव्यांश की निर्भीक और फक्कड़ अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा की पहचान के बाद उसी अंश से शब्द और शैली के उदाहरण देकर टिप्पणी पुष्ट कीजिए।

8(ग). काव्यांश का भाव-वैशिष्ट्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश का भाव-वैशिष्ट्य राम के प्रति अनन्य समर्पण, लोकापवाद से निर्भयता और सांसारिक मोह से दूरी में निहित है।
- उत्तर में पद्यांश के शब्दों के आधार पर आशय स्पष्ट करना चाहिए और प्रतीक तथा वास्तविक स्थिति का संबंध दिखाना चाहिए।

चरण 1: राम के प्रति समर्पण तुलसी स्वयं को खुले रूप से राम का सेवक घोषित करते हैं। उनकी सबसे महत्त्वपूर्ण पहचान राम के प्रति भक्ति है। इसी आत्मविश्वास के कारण वे दूसरों की कही बातों से विचलित नहीं होते। जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ में लोकनिंदा और सामाजिक आलोचना के प्रति उनकी निर्भीक उपेक्षा व्यक्त होती है। भक्ति उन्हें आंतरिक स्वाधीनता और आत्मसम्मान प्रदान करती है।

चरण 2: फक्कड़ता और सांसारिक निर्लिप्तता माँगकर भोजन करना और मसीत में सो जाना न्यूनतम आवश्यकताओं में संतोष तथा आश्रय के प्रति अनासक्ति का संकेत है। लैबेको एकु न दैबेको दोऊ में सांसारिक लेन-देन और स्वार्थपूर्ण संबंधों से मुक्त रहने का भाव है। कवि धन, प्रतिष्ठा और सामाजिक स्वीकृति पर निर्भर नहीं रहना चाहता। इस प्रकार सच्ची भक्ति यहाँ सरल जीवन, आत्मनिर्भर चेतना और बंधनरहित फक्कड़ स्वभाव से जुड़ी है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश राम के प्रति अनन्य भक्ति, लोकनिंदा से निर्भीकता, सादगी, संतोष और सांसारिक मोह से मुक्त फक्कड़ जीवन का भाव व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: भाव-वैशिष्ट्य में शब्द-सौंदर्य गिनाने के बजाय भक्ति, निर्भीकता और निर्लिप्तता को पाठ से जोड़िए।

अथवा

8. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे घुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने [6 अंक]

8(क). प्रात नभ की तुलना किससे की गई है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में किसी दृश्य के समान रूप या रंग वाली परिचित वस्तु से तुलना की जाती है।
- काव्यांश में प्रातःकालीन आकाश का रंग और उसकी निर्मलता तुलना का आधार हैं।

चरण 1: तुलना पहचानिए शमशेर बहादुर सिंह ने प्रातःकाल के आकाश की तुलना बहुत नीले शंख से की है। इसका प्रत्यक्ष संकेत पंक्ति प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे में मिलता है। यहाँ आकाश उपमेय, नीला शंख उपमान तथा जैसे उपमावाचक शब्द है।

चरण 2: समानता का कारण स्पष्ट कीजिए सूर्योदय से पहले आकाश गहरे नीले रंग का दिखाई देता है। नीले शंख का रंग भी ऐसा ही सघन और आकर्षक होता है। शंख की निर्मल, चिकनी और उज्ज्वल आभा के सहारे कवि भोर के आकाश की स्वच्छता और सुंदरता को मूर्त बना देते हैं। इस तुलना से पाठक केवल रंग नहीं जानता, बल्कि शांत और पवित्र लगने वाले प्रभात का अनुभव भी करता है। तुलना का मुख्य आधार दोनों का गहरा नीलापन है; अन्य पंक्तियों के राख, सिल और केसर वाले बिंब भोर के बदलते रंगों को आगे विकसित करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्रातःकालीन आकाश की तुलना बहुत नीले शंख से उसके गहरे नीले रंग और निर्मल सौंदर्य के कारण की गई है।

त्वरित सुझाव: उपमा के उत्तर में उपमेय, उपमान और दोनों की स्पष्ट समानता अवश्य बताइए।

8(ख). काव्यांश में चित्रित परिवेश के वैशिष्ट्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति का चित्रण परिचित घरेलू वस्तुओं के माध्यम से भी सजीव बनाया जा सकता है।
- बिंब रंग, प्रकाश और स्पर्श के अनुभव को मूर्त रूप देते हैं।

चरण 1: परिवेश की पहचान कीजिए काव्यांश में सूर्योदय से ठीक पहले की शांत, स्वच्छ और ताजी भोर का परिवेश चित्रित है। आकाश का गहरा नीलापन धीरे-धीरे हलके उजाले और लालिमा में बदल रहा है। कवि इसी परिवर्तनशील दृश्य को नीले शंख, गीले चौके, काली सिल और स्लेट जैसे बिंबों से सामने लाते हैं।

चरण 2: घरेलू बिंबों की विशेषता स्पष्ट कीजिए राख से लीपा हुआ अभी गीला चौका ग्रामीण घरेलू जीवन की सादगी और स्वच्छता का बोध कराता है। काली सिल पर थोड़ा लाल केसर और स्लेट पर लाल खड़िया का बिंब अँधेरे आकाश में उभरती लालिमा को व्यक्त करता है। इनमें सजावटी या असाधारण वस्तुओं के स्थान पर दैनिक जीवन की जानी-पहचानी वस्तुएँ हैं। इसलिए प्रकृति आत्मीय और निकट लगती है। रंगों के सूक्ष्म बदलाव के साथ गीलेपन का स्पर्श-बोध भी जुड़ता है। दृश्य शांत होते हुए भी रंग बदलने के कारण गतिशील है और प्रभात की ताजगी से भरा है।

चरण 3: निष्कर्ष यह परिवेश प्रभात की शांति, ताजगी और बदलती रंगत को ग्रामीण घरेलू जीवन के सहज, आत्मीय बिंबों से साकार करता है।

त्वरित सुझाव: परिवेश की विशेषता बताते समय हर विशेषण को काव्यांश के किसी ठोस बिंब से जोड़िए।

8(ग). पद्यांश के भाषिक सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषिक सौंदर्य में शब्द-चयन, बिंब, अलंकार और लय की भूमिका देखी जाती है।
- मुक्तछंद में भी पंक्तियों का विन्यास और शब्दों का प्रवाह दृश्य को प्रभावी बनाते हैं।

चरण 1: भाषा और बिंबों को पहचानिए पद्यांश की भाषा सरल, बोलचाल के निकट और चित्रात्मक है। चौका, सिल, केसर, स्लेट तथा खड़िया चाक जैसे परिचित शब्द भोर के आकाश को आँखों के सामने उपस्थित कर देते हैं। नीला, काला और लाल जैसे रंगवाचक शब्द दृश्य की रंग-योजना को उभारते हैं। अभी गीला पड़ा है से दृश्य में ताजगी और स्पर्श की अनुभूति जुड़ती है।

चरण 2: अलंकार और अभिव्यक्ति का प्रभाव बताइए बहुत नीला शंख जैसे में उपमा अलंकार है। सिल पर केसर घुलने और स्लेट पर लाल खड़िया मल दिए जाने की संभावनाओं से भोर की लालिमा कल्पनाशील ढंग से व्यक्त होती है। छोटी-बड़ी पंक्तियों वाला मुक्तछंद दृश्य के क्रमिक खुलने के अनुकूल है। भाषा में कृत्रिम सजावट नहीं है; सहज शब्दों और नवीन तुलनाओं से सौंदर्य पैदा होता है। घरेलू वस्तुओं के माध्यम से विराट आकाश को समझाने की शैली कविता को आत्मीय बनाती है। रंग और गीलेपन के सूक्ष्म संकेत मिलकर संवेदनात्मक चित्र उपस्थित करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सरल शब्दावली, सजीव रंग-बिंब, उपमा और मुक्तछंद का सहज प्रवाह पद्यांश के भाषिक सौंदर्य के प्रमुख आधार हैं।

त्वरित सुझाव: भाषिक सौंदर्य के उत्तर में केवल अलंकार न गिनाएँ; शब्द, बिंब और उनके प्रभाव भी समझाएँ।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर चिड़िया के परों में चंचलता और कवि के पदों की शिथिलता के कारणों पर विचार करते हुए कविता के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रियजनों से मिलने की आशा जीवन में उत्साह और गति पैदा करती है।
- एक ही संध्या-दृश्य चिड़िया और अकेले कवि के मन पर अलग प्रभाव डालता है।

चरण 1: चिड़िया की चंचलता का कारण दिन ढलते ही चिड़िया को घोंसले में प्रतीक्षा कर रहे बच्चों का ध्यान आता है। बच्चे भोजन और माँ के स्नेह की आशा में घोंसलों से झाँक रहे होंगे। उनसे मिलने और उनकी जरूरत पूरी करने की आकुलता उसके पंखों में चंचलता भर देती है। घर लौटना उसके लिए केवल यात्रा पूरी करना नहीं, बल्कि प्रेमपूर्ण संबंधों के बीच पहुँचना है। इसीलिए संध्या उसे अधिक तेज उड़ने की प्रेरणा देती है।

चरण 2: कवि के कदमों की शिथिलता का कारण इसके विपरीत कवि सोचता है कि उससे मिलने के लिए कौन व्याकुल है और वह किसके लिए जल्दी करे। उसे अपने जीवन में ऐसे आत्मीय व्यक्ति का अभाव अनुभव होता है जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा हो। मिलने की आशा और घर के आकर्षण के अभाव में उसके कदम धीमे पड़ जाते हैं। बाहरी दिन का ढलना उसके भीतर अकेलेपन और जीवन की नश्वरता की अनुभूति को भी गहरा करता है। उसकी विह्वलता और शिथिलता संबंधहीनता की पीड़ा से उत्पन्न होती है।

चरण 3: कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए हरिवंश राय बच्चन की कविता में ढलता दिन समय के निरंतर बीतने की चेतना जगाता है।

चिड़िया और कवि के विपरीत अनुभव बताते हैं कि प्रेम, अपनापन और किसी की प्रतीक्षा जीवन को उद्देश्य तथा स्फूर्ति देते हैं। इनका अभाव व्यक्ति को उदास और निष्क्रिय कर सकता है। अतः कविता संध्या के प्रकृति-दृश्य के माध्यम से मानवीय संबंधों की आवश्यकता, अकेलेपन की वेदना और समय के प्रवाह के प्रति संवेदनशीलता व्यक्त करती है।

चरण 4: निष्कर्ष बच्चों का प्रेम चिड़िया को शीघ्र लौटने का उत्साह देता है, जबकि प्रतीक्षा करने वाले आत्मीय के अभाव में कवि शिथिल है; कविता जीवन में प्रेम और संबंधों की प्रेरक शक्ति व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: दोनों की गति की तुलना करते समय कारण को प्रतीक्षा और आत्मीय संबंधों से जोड़कर प्रतिपाद्य निकालिए।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'सही बात का सही शब्द से जुड़ना' क्यों ज़रूरी है ? ऐसा न होने के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं ? 'बात सीधी थी, पर' के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सफल अभिव्यक्ति में कथ्य और उसके अनुकूल भाषा के बीच सहज सामंजस्य होना चाहिए।
- शब्दों का आकर्षण विचार की स्पष्टता की जगह नहीं ले सकता।

चरण 1: सही शब्द की आवश्यकता बताइए कुँवर नारायण की कविता के अनुसार सीधी और स्पष्ट बात तभी प्रभावी ढंग से संप्रेषित होती है जब उसके लिए उपयुक्त, सहज और सटीक शब्द चुने जाएँ। सही शब्द विचार का आशय सुरक्षित रखता है और पाठक तक उसे बिना अनावश्यक उलझाव के पहुँचाता है। भाषा का उद्देश्य बात को स्पष्ट करना है। केवल चमत्कार या कठिन शब्दों से प्रभावित करने का प्रयत्न इस उद्देश्य में बाधा डाल सकता है। इसलिए भाव के अनुकूल शब्द चुनना आवश्यक है।

चरण 2: असंगत शब्द-प्रयोग का परिणाम स्पष्ट कीजिए कविता में सीधी बात को भाषा के चक्कर में उलझाने पर वह टेढ़ी होती जाती है। कवि उसे प्रभावशाली बनाने के लिए अधिक घुमाता और सँवारता है, किंतु परिणाम उलटा होता है। पेंच की चूड़ी बिगड़ने का बिंब बताता है कि अधिक बल लगाने से अभिव्यक्ति का स्वाभाविक संबंध टूट सकता है। तब शब्द बाहर से आकर्षक दिखाई देने पर भी अर्थ की पकड़ खो देते हैं। बात पाठक के लिए अस्पष्ट और कठिन हो जाती है तथा उसका मूल प्रभाव समाप्त होने लगता है।

चरण 3: कविता का संदेश निकालिए कविता सहजता, धैर्य और भाषिक विवेक का महत्त्व बताती है। विचार के अनुरूप शब्द मिल जाने पर कथन में स्पष्टता और प्रभाव अपने आप आते हैं। उलझी हुई भाषा को और कठिन बनाने के बजाय रचनाकार को कथ्य पर लौटकर उसके लिए ठीक शब्द तलाशने चाहिए। इस प्रकार कविता अभिव्यक्ति में बनावट और अनावश्यक शब्द-कौशल से बचने की प्रेरणा देती है। भाषा और भाव का संतुलन टूटने पर संप्रेषण विफल हो सकता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही बात और सही शब्द का मेल अर्थ को स्पष्ट और प्रभावी रखता है; अनुचित शब्द-कौशल से बात उलझती है, मूल आशय खोता है और संप्रेषण कमजोर पड़ता है।

त्वरित सुझाव: भाषा की समस्या समझाते समय कविता के पेंच वाले बिंब को अर्थ और शब्द के बिगड़ते संबंध से जोड़िए।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पेट की आग राम-भक्ति के मेघ से ही शान्त हो सकती है – तुलसी की रचना की पृष्ठभूमि में तत्कालीन सामाजिक दशा पर टिप्पणी कीजिए ।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भूख की आग आर्थिक अभाव और आजीविका के संकट का रूपक है।

- तुलसीदास सामाजिक पीड़ा को व्यक्त करते हुए राम की करुणा में आश्रय खोजते हैं।

चरण 1: तत्कालीन सामाजिक दशा बताइए तुलसीदास के समय समाज में गरीबी, बेरोजगारी और आजीविका का गंभीर संकट था। किसान को खेती से निर्वाह नहीं मिल रहा था, भिखारी को भीख, व्यापारी को व्यापार और सेवक को काम नहीं मिल रहा था। जीविका के साधन रुक जाने से लोग असहाय होकर एक-दूसरे से पूछते थे कि कहाँ जाएँ और क्या करें। कवि का चित्रण किसी एक व्यक्ति की परेशानी तक सीमित नहीं है; समाज के अनेक वर्गों की आर्थिक दुर्दशा उसमें समाई हुई है।

चरण 2: पेट की आग की तीव्रता स्पष्ट कीजिए पेट की भूख मनुष्य को अनेक प्रकार के श्रम और जोखिम उठाने के लिए विवश करती है। लोग पढ़ते हैं, कला दिखाते हैं, पर्वत चढ़ते हैं और शिकार तक करते हैं। भूख की विवशता में नैतिक भेद भी कमजोर पड़ जाते हैं और व्यक्ति अनुचित कार्यों की ओर बढ़ सकता है। बच्चों को बेचने तक की विवशता का उल्लेख तत्कालीन दरिद्रता की भयावहता दिखाता है। तुलसी पेट की आग को समुद्र की बड़वाग्नि से भी अधिक तीव्र बताकर इस पीड़ा की व्यापकता और विनाशक शक्ति व्यक्त करते हैं।

चरण 3: राम-भक्ति के मेघ का आशय समझाइए कवि को ऐसी विपत्ति में राम की करुणा और कृपा का आश्रय दिखाई देता है। जैसे मेघ की वर्षा धधकती आग को शांत करती है, वैसे ही रामरूपी करुणामय मेघ भूख और दीनता से पीड़ित जनों को राहत दे सकते हैं। यह कथन कवि के भक्तिपरक विश्वास को प्रकट करता है। इसके पीछे समाज के दुखों के प्रति गहरी संवेदना और दीन-दुखियों के उद्धार की आकांक्षा है। इसलिए राम-भक्ति का प्रसंग सामाजिक वास्तविकता से कटकर नहीं, बल्कि उसी व्यथा की पृष्ठभूमि में आता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवितावली में व्यापक दरिद्रता, आजीविका का अभाव और भूख से उत्पन्न नैतिक विवशता का चित्र है; तुलसी इस दाह को शांत करने के लिए राम की करुणा में आश्रय देखते हैं।

त्वरित सुझाव: सामाजिक दशा के उत्तर में खेती, व्यापार, सेवा और भूख की विवशता के उदाहरण देकर भक्ति का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

---

10. जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है । जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की । उचित भी था क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक-भुशुंडि जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं । छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया । जिठानियाँ बैठकर लोक-चर्चा करतीं और उनके कलूटे लड़के धूल उड़ाते; वह मट्ठा फेरती, कूटती, पीसती, राँधती और उसकी नन्हीं लड़कियाँ गोबर उठातीं, कंडे पाथतीं ।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). भक्तिन जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख क्यों न प्राप्त कर सकी ? उसके सुखाभाव के कारणों पर तर्कसहित विचार कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में पुत्र और पुत्री के आधार पर होने वाला भेदभाव भक्तिन की पीड़ा का मुख्य कारण है।
- उत्तर में उपेक्षा तथा श्रम के असमान वितरण को गद्यांश के उदाहरणों से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: सुखाभाव का कारण भक्तिन ने लगातार तीन कन्याओं को जन्म दिया था। पुत्रों को ही परिवार की प्रतिष्ठा और कमाई का आधार मानने वाली सास तथा जिठानियाँ इससे असंतुष्ट थीं। इसलिए वे उसका सम्मान करने के स्थान पर ओठ बिचकाकर उपेक्षा करती थीं। कन्या का जन्म कोई अपराध नहीं था, किंतु परिवार की संकीर्ण सोच उसे दोषी मान रही थी।

चरण 2: दैनिक जीवन पर प्रभाव सास और जिठानियों को पुत्रवती होने से महत्त्व मिला हुआ था। जिठानियाँ बैठकर बातें करती थीं, जबकि भक्तिन मट्ठा फेरने, कूटने, पीसने और भोजन बनाने में लगी रहती थी। उसकी छोटी बेटियाँ भी काम करती थीं। इस अन्यायपूर्ण श्रम और तिरस्कार के कारण जीवन का दूसरा परिच्छेद भी उसके लिए सुखद न बन सका।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन का दुख तीन बेटियों का जन्म नहीं, बल्कि पुत्रमोह से उत्पन्न पारिवारिक उपेक्षा और निरंतर श्रम का बोझ था।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय गद्यांश का सटीक संकेत देकर कारण और प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

10(ख). भक्तिन की सास और जिठानियों के पारिवारिक सम्मान-प्राप्ति का क्या कारण था तथा भक्तिन के प्रति उनके व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में पारिवारिक सम्मान का आधार पुत्रों का जन्म दिखाया गया है।
- सास तथा जिठानियों की स्थिति की तुलना भक्तिन के प्रति उनके व्यवहार से करनी चाहिए।

चरण 1: सम्मान का आधार भक्तिन की सास तीन कमाऊ पुत्रों की माँ थी, इसलिए परिवार में उसे प्रतिष्ठित पुरखिन का स्थान मिला था। दोनों जिठानियाँ भी पुत्रों को जन्म दे चुकी थीं और इसी आधार पर वैसी प्रतिष्ठा की अधिकारी बनने की आशा रखती थीं। उनके सम्मान का कारण उनका कोई विशेष परिश्रम नहीं, परिवार की पुत्रप्रधान मान्यता थी।

चरण 2: भक्तिन के प्रति व्यवहार भक्तिन की पहली बेटी के बाद दो और बेटियाँ हुईं तो सास तथा जिठानियों ने ओठ बिचकाकर अपनी असंतुष्टि और उपेक्षा प्रकट की। वे उसे हीन समझने लगीं। जिठानियाँ आराम से लोकचर्चा करती थीं, जबकि भक्तिन और उसकी बच्चियों पर घर के कठिन काम डाल दिए गए। इस प्रकार पुत्रवती होने का उनका गर्व भक्तिन के प्रति भेदभाव में बदल गया।

चरण 3: निष्कर्ष सास और जिठानियों का सम्मान पुत्रवती होने के कारण था; तीन बेटियों की माँ भक्तिन के साथ उन्होंने तिरस्कार और श्रम का असमान व्यवहार किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय गद्यांश का सटीक संकेत देकर कारण और प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

10(ग). आशय स्पष्ट कीजिए – "छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य में लेखिका अन्यायपूर्ण सामाजिक मान्यता को उसी की भाषा में प्रकट करती हैं।
- लीक और दंड के अर्थ को प्रसंग से जोड़कर समझना चाहिए।

चरण 1: लीक का प्रसंगगत अर्थ यहाँ लीक से आशय परिवार में पुत्रों को जन्म देने की चली आती परंपरा और अपेक्षा से है। सास और जिठानियाँ पुत्रवती थीं, जबकि छोटी बहू भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया। परिवार की संकीर्ण दृष्टि में उसका यह स्थिति-भेद मानो प्रचलित रास्ते से हटना था, जबकि संतान के लिंग के लिए माँ को दोष देना अनुचित है।

चरण 2: दंड तथा लेखिका का व्यंग्य परिवार ने भक्तिन और उसकी बेटियों पर अधिक काम डालकर तथा उनकी उपेक्षा करके उन्हें दंड दिया। लेखिका का यह कहना कि दंड आवश्यक हो गया, उस दंड का समर्थन नहीं है। इसमें पुत्रियों के जन्म को अपराध मानने वाली मानसिकता पर तीखा व्यंग्य है। बिना किसी दोष के माँ-बेटियों को कष्ट देना पारिवारिक अन्याय को उजागर करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय पुत्रप्रधान परिवार की रूढ़ि पर व्यंग्य करना है, जो बेटियों के जन्म को भक्तिन का दोष मानकर उसे अनुचित दंड देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय गद्यांश का सटीक संकेत देकर कारण और प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

10(घ). भक्तिन और उसकी दोनों नन्हीं लड़कियों को पारिवारिक दण्ड किस रूप में भोगना पड़ा ? इस दण्ड के औचित्य-अनौचित्य के विषय में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दंड के रूप बताने के साथ उसका नैतिक मूल्यांकन करना आवश्यक है।
- गद्यांश में लड़कों और लड़कियों की दिनचर्या का अंतर भेदभाव का प्रमाण है।

चरण 1: दंड का रूप भक्तिन को मट्ठा फेरना, कूटना, पीसना और भोजन बनाना पड़ता था। उसकी नन्हीं लड़कियाँ गोबर उठातीं और कंडे पाथती थीं। इसके विपरीत जिठानियाँ बैठकर बातें करती थीं तथा उनके लड़के धूल उड़ाकर खेलते थे। इस प्रकार माँ और बच्चियों को निरंतर काम, उपेक्षा और बचपन के आनंद से वंचित रहने का दंड मिला।

चरण 2: दंड का औचित्य यह दंड पूर्णतः अनुचित था। बेटियों का जन्म कोई अपराध नहीं है और इसके लिए माँ को दोषी ठहराना भी गलत है। परिवार का काम सबकी क्षमता के अनुसार बाँटा जाना चाहिए था। छोटी बच्चियों से काम कराना और लड़कों को खेलने देना दोहरे मानदंड को दिखाता है। इस व्यवहार ने स्त्री और कन्या के प्रति अन्याय तथा पुत्रमोह को प्रकट किया है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन और उसकी बेटियों ने कठोर श्रम तथा तिरस्कार का दंड भोगा; लिंगभेद पर आधारित होने के कारण यह दंड सर्वथा अन्यायपूर्ण था।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय गद्यांश का सटीक संकेत देकर कारण और प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

अथवा

10. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी । पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख़याल से ढोलक बजाता हो, किन्तु गाँव के अर्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी । बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था । स्पन्दन-शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी । अवश्य ही ढोलक की आवाज़ में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे । [8 अंक]

10(क). रात्रि की विभीषिका कैसी थी ? ढोलक किस रूप में उसको चुनौती देती थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में महामारीग्रस्त जीवन की निराशा और ढोलक से मिलने वाले साहस का विरोध है।
- ढोलक की भूमिका मानसिक संबल देने की है; उसे रोग की औषधि नहीं समझना चाहिए।

चरण 1: रात्रि की विभीषिका महामारी से पीड़ित गाँव में लोग लगभग मृतप्राय थे। उनके पास औषधि, उपचार और आवश्यक पथ्य का अभाव था। ऐसे में रात रोग, असहायता और मृत्यु की आशंका के कारण अत्यंत भयावह लगती थी। शक्तिहीन लोगों के सामने जीवन का कोई भरोसा नहीं बचा था; यही रात्रि की विभीषिका थी।

चरण 2: ढोलक की चुनौती का रूप पहलवान संध्या से सुबह तक ढोलक बजाता था। उसकी लय भय और निराशा के बीच साहस का स्वर बनती थी। उसे सुनकर बूढ़ों, बच्चों और जवानों की आँखों में दंगल का दृश्य उभरता तथा निष्क्रिय शरीर में भी जोश का अनुभव होता था। ढोलक महामारी रोक नहीं सकती थी, पर लोगों के मन में जीवनीशक्ति जगाकर मृत्यु के भय को कम करती थी।

चरण 3: निष्कर्ष रात की विभीषिका रोग, उपचारहीनता और मृत्यु के भय की थी; ढोलक साहस तथा जीवनीशक्ति जगाकर उसे चुनौती देती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय गद्यांश का सटीक संकेत देकर कारण और प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

10(ख). दंगल का दृश्य किस-किसमें किन रूपों में उपयोगी होता था और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दंगल का दृश्य वास्तविक आयोजन नहीं, ढोलक से जागी स्मृति या मानसिक छवि है।
- उत्तर में प्रभावित लोगों, प्रभाव के रूप और उसके कारण तीनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: किस पर और क्या प्रभाव पड़ा ढोलक सुनने पर गाँव के बूढ़ों, बच्चों और जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य उभर आता था। यह दृश्य सभी आयु के रोगग्रस्त तथा निराश लोगों के लिए उपयोगी होता था। उससे उनके निर्बल मन में उत्साह लौटता और स्पंदनहीन-से शरीर में भी जैसे बिजली दौड़ जाती थी।

चरण 2: प्रभाव का कारण और उपयोगिता दंगल शक्ति, संघर्ष और मुकाबला करने के साहस का प्रतीक था। ढोलक की परिचित लय उसकी स्मृति जगाकर असहाय रोगियों को मानसिक संबल देती थी। वे अपनी दुर्बलता और मृत्यु की आशंका से कुछ समय ऊपर उठ पाते थे। इससे महामारी का इलाज नहीं होता था, किंतु भय घटता था और जीवन के संकट का सामना करने की शक्ति मिलती थी।

चरण 3: निष्कर्ष दंगल की मानसिक छवि बूढ़ों, बच्चों और जवानों में जोश तथा संघर्ष का साहस जगाती थी; इसी कारण वह रोग और मृत्यु से डरे लोगों के लिए उपयोगी थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय गद्यांश का सटीक संकेत देकर कारण और प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

10(ग). ढोलक की आवाज़ औषध-गुण-हीन होकर भी मृतप्रायों पर क्या प्रभाव डालती थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कला का मानसिक प्रभाव और चिकित्सा का शारीरिक प्रभाव अलग-अलग हैं।
- गद्यांश ढोलक को संजीवनी कहता है, पर उसमें रोग दूर करने का गुण स्वीकार नहीं करता।

चरण 1: शारीरिक उपचार की सीमा ढोलक की आवाज़ में न बुखार उतारने का औषधीय गुण था और न महामारी की विनाशकारी शक्ति रोकने की क्षमता। इसलिए उसे मृतप्राय लोगों को रोगमुक्त कर देने वाला साधन नहीं कहा जा सकता। गद्यांश स्पष्ट करता है कि ढोलक का प्रभाव उपचार के स्थान पर मनोबल के स्तर पर काम करता था।

चरण 2: मृतप्राय लोगों को संबल ढोलक की लय सुनकर अशक्त लोगों की आँखों के सामने दंगल का दृश्य उभरता और निष्क्रिय स्नायुओं में भी उत्साह का संचार अनुभव होता था। वह उनके भीतर संजीवनी जैसी शक्ति भरती थी। सबसे बड़ा प्रभाव यह था कि उनका मृत्यु का भय कम हो जाता था; मरते समय भी वे मानसिक आतंक और व्याकुलता से मुक्त होकर आँखें मूँद पाते थे।

चरण 3: निष्कर्ष औषधीय गुण न होने पर भी ढोलक मृतप्राय लोगों में उत्साह, साहस और मानसिक शांति भरती थी तथा मृत्यु का भय घटाती थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय गद्यांश का सटीक संकेत देकर कारण और प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

10(घ). 'औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन' तथा 'स्पन्दन-शक्ति-शून्य स्नायुओं' का अर्थ स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त शब्दों का अर्थ उनके घटकों तथा गद्यांश के प्रसंग से स्पष्ट होता है।
- यहाँ अभाव और अत्यधिक शारीरिक निर्बलता बताने वाले शब्दसमूह आए हैं।

चरण 1: औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन का अर्थ औषधि का अर्थ दवा, उपचार का अर्थ रोग के इलाज की व्यवस्था और पथ्य का अर्थ रोगी के लिए उपयुक्त भोजन तथा आहार है। विहीन का अर्थ इन सुविधाओं से रहित है। पूरे शब्दसमूह का आशय ऐसे रोगियों से है जिन्हें न दवा मिल रही थी, न इलाज और न स्वास्थ्य के अनुकूल भोजन। यह गाँव की असहाय अवस्था को व्यक्त करता है।

चरण 2: स्पंदन-शक्ति-शून्य स्नायुओं का अर्थ स्पंदन का अर्थ धड़कन या हलचल, शक्ति का अर्थ सामर्थ्य और शून्य का अर्थ रहित है। यहाँ स्नायु शरीर की गति और स्फूर्ति से जुड़े तंतुओं का बोध कराते हैं। शब्दसमूह का आशय अत्यधिक निर्बल, निष्क्रिय-से शरीर से है। ऐसे रोगियों में भी ढोलक की लय सुनकर बिजली दौड़ने जैसा उत्साह पैदा होना उसके गहरे मानसिक प्रभाव को बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष पहले शब्दसमूह का अर्थ दवा, इलाज और उपयुक्त आहार से रहित होना है; दूसरे का अर्थ शरीर के तंतुओं में गति और स्फूर्ति की शक्ति का अत्यधिक अभाव है।

त्वरित सुझाव: उत्तर लिखते समय गद्यांश का सटीक संकेत देकर कारण और प्रभाव को अलग-अलग स्पष्ट कीजिए।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जाति-प्रथा के आधार पर श्रम-विभाजन समाज में किन समस्याओं का कारण रहा है ? आधुनिक समय में इस दिशा में क्या परिवर्तन हुआ है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पाठ में डॉ. आंबेडकर जाति-प्रथा को केवल श्रम का विभाजन नहीं, श्रमिकों का विभाजन मानते हैं।
- पेशा चुनने की स्वतंत्रता और अवसर की समानता व्यक्ति की क्षमता के विकास के लिए आवश्यक हैं।

चरण 1: जातिगत विभाजन की समस्याएँ जाति-प्रथा व्यक्ति का व्यवसाय उसकी रुचि, योग्यता और प्रशिक्षण के स्थान पर जन्म से निर्धारित कर देती है। इससे समाज ऊँच-नीच के स्थायी वर्गों में बँट जाता है और श्रमिकों के बीच भेदभाव पैदा होता है। व्यक्ति अपने वंशानुगत काम को छोड़कर अपनी क्षमता के अनुरूप दूसरा काम नहीं चुन पाता। कुछ व्यवसायों को हीन मानने से उन्हें करने वाले लोगों को भी अपमान सहना पड़ता है। काम में रुचि न होने से कार्यकुशलता घटती है; आर्थिक परिस्थितियाँ बदलने पर पेशा बदलने की रोक बेरोजगारी और निर्धनता बढ़ाती है।

चरण 2: आधुनिक परिवर्तन और पाठ का संदेश आधुनिक समाज में शिक्षा, औद्योगीकरण और नए व्यवसायों के विस्तार से जन्म पर आधारित पेशागत बंधन कमजोर हुए हैं। व्यक्ति की योग्यता और प्रशिक्षण को महत्त्व मिलने लगा है; विभिन्न जातियों के लोग अलग-अलग व्यवसाय अपना रहे हैं। समानता और स्वतंत्रता के लोकतांत्रिक मूल्यों ने भी इस परिवर्तन को बल दिया है। फिर भी जातिगत पूर्वाग्रह पूरी तरह मिटे नहीं हैं। आंबेडकर के विचारों के अनुसार उचित श्रम-विभाजन वही है जिसमें व्यक्ति को काम चुनने और आवश्यकता पड़ने पर बदलने का अवसर मिले।

चरण 3: निष्कर्ष जाति-आधारित श्रम-विभाजन ने असमानता, अपमान, अकुशलता और बेरोजगारी बढ़ाई। आधुनिक समय में पेशागत गतिशीलता बढ़ी है; आदर्श समाज के लिए जन्म के स्थान पर योग्यता और स्वतंत्र चयन को आधार बनाना आवश्यक है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले जन्म से बँधे व्यवसाय की हानियाँ लिखें, फिर आधुनिक पेशागत स्वतंत्रता से उसकी तुलना करें।

11(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'शिरीष का फूल संघर्ष-भरे जीवन में भी जीवन्त बने रहने की सीख देता है ।' उपयुक्त तर्क देकर प्रतिपादित कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष में प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भी कोमलता और जीवन-रस बनाए रखने की शक्ति देखते हैं।
- शिरीष का अवधूत स्वभाव अनासक्ति, मस्ती और परिस्थितियों से अपराजित रहने का प्रतीक है।

चरण 1: भीषण गर्मी में खिलने का अर्थ जब प्रचंड गर्मी और लू से धरती तप रही होती है तथा अनेक पेड़-पौधे मुरझाने लगते हैं, तब शिरीष के कोमल फूल खिले रहते हैं। बाहरी ताप उसकी सरसता को समाप्त नहीं कर पाता। यह स्थिति मनुष्य को बताती है कि संघर्ष जीवन का अनिवार्य हिस्सा है, पर उसके कारण उत्साह और आशा छोड़ देना उचित नहीं। कठिन परिस्थितियों के भीतर भी अपनी सृजनशीलता तथा जीवट को बचाए रखना ही सच्ची जीवन्तता है। शिरीष की कोमलता उसकी दुर्बलता नहीं, प्रतिकूलता सहने वाली भीतरी शक्ति का संकेत है।

चरण 2: अवधूत जैसी अनासक्ति से मिलने वाली सीख लेखक को शिरीष ऐसे अवधूत की तरह लगता है जो सुख-दुख और बाहरी हलचल के बीच अपनी मस्ती बनाए रखता है। वह वातावरण से जीवन-रस ग्रहण कर फूल देता रहता है। मनुष्य भी विपत्ति में कटु, निराश या संवेदनहीन होने के बजाय अपनी सहजता और दूसरों के प्रति सद्भाव बनाए रख सकता है। लेखक इसी गुण के कारण शिरीष को स्मरण करता है। उसके फूल संदेश देते हैं कि आघात सहते हुए भी सौंदर्य और आनंद उत्पन्न करना संभव है; संघर्ष से भागे बिना हृदय की कोमलता बचानी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष तपती ऋतु में भी खिलकर सिखाता है कि संघर्ष के बीच धैर्य, अनासक्ति, सरसता और सृजनशीलता बनाए रखना ही जीवन्त जीवन का लक्षण है।

त्वरित सुझाव: शिरीष की गर्मी सहने की क्षमता को मनुष्य के धैर्य से और फूलों की कोमलता को उसकी संवेदना से जोड़ें।

11(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'नमक' कहानी भारत-पाक के विस्थापित पुनर्वासित लोगों के दिलों को टटोलने वाली कहानी है – उदाहरणों के आधार पर पुष्टि कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी विभाजन से बिछड़े लोगों के अपने जन्मस्थान के प्रति अटूट लगाव को सामने लाती है।
- नमक स्वाद की वस्तु के साथ मातृभूमि की स्मृति और मनुष्यों को जोड़ने वाली आत्मीयता का प्रतीक बन जाता है।

चरण 1: सिख बीबी का लाहौर से लगाव भारत में रह रही सिख बीबी विभाजन के बाद भी लाहौर को अपने मन से नहीं निकाल पातीं। सफिया के पाकिस्तान जाने की बात सुनकर वे उससे लाहौरी नमक लाने का आग्रह करती हैं। यह माँग किसी महँगी वस्तु की नहीं, उस मिट्टी के स्वाद की है जिससे उनका पुराना जीवन जुड़ा था। पुनर्वास ने रहने का स्थान बदल दिया है, पर स्मृतियों का घर वही है। नमक के बहाने उनकी जन्मभूमि की कसक और अपनापन व्यक्त होता है।

चरण 2: सीमा के अधिकारियों की साझा संवेदना नमक लाने की प्रक्रिया में सफिया को दोनों देशों की सीमा और नियमों का सामना करना पड़ता है। फिर भी कस्टम अधिकारियों का व्यवहार बताता है कि सरकारी विभाजन ने दिलों का रिश्ता नहीं मिटाया। पाकिस्तानी अधिकारी देहली के अपने लगाव को याद करता है और भारतीय अधिकारी ढाका को वतन बताते हुए मानवीय आत्मीयता प्रकट करता है। वे सिख बीबी की इच्छा को केवल सामान ले जाने का मामला नहीं मानते। अलग-अलग स्थानों से बिछड़े इन लोगों की स्मृतियाँ एक-दूसरे की पीड़ा समझने का आधार बनती हैं। कहानी इस प्रकार दोनों ओर के विस्थापित लोगों की भीतर छिपी हूक को उजागर करती है।

चरण 3: निष्कर्ष सिख बीबी की लाहौरी नमक की चाह और सीमा पर मिले अधिकारियों की आत्मीयता सिद्ध करती है कि राजनीतिक बँटवारे के बाद भी वतन की स्मृति और मानवीय संबंध जीवित रहते हैं।

त्वरित सुझाव: उदाहरण देते समय सिख बीबी की नमक की माँग तथा दोनों अधिकारियों के वतन से लगाव को मुख्य आधार बनाएँ।

11(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विष्णु खरे के पाठ में चार्ली की कला जीवन के अभावों, अपमान और पीड़ा से गहरे जुड़ी है।
- चार्ली अपने निजी दुख को व्यापक मानवीय अनुभव बनाकर हँसी और करुणा का अनूठा मेल रचते हैं।

चरण 1: अभावों से मिली संवेदनशीलता चार्ली का बचपन गरीबी, असुरक्षा और पारिवारिक कष्टों में बीता। माँ की अस्वस्थता और जीवन-निर्वाह की कठिनाइयों ने उन्हें बहुत छोटी उम्र में जीवन की कठोरता से परिचित करा दिया। इस अनुभव ने उन्हें वंचित और असहाय मनुष्यों के दुख को भीतर से समझने की दृष्टि दी। इसलिए उनकी फिल्मों का सामान्य, संघर्षरत आदमी दर्शकों को अपना लगता है। वे गरीबी को दूर खड़े होकर देखने वाले कलाकार नहीं थे; उनकी करुणा भोगे हुए यथार्थ से जन्मी थी।

चरण 2: संघर्ष का अभिनय और हास्य में रूपांतरण चार्ली ने अपमान और असफलता के सामने हार मानने के बजाय उन्हें अपने अभिनय का सृजनात्मक आधार बनाया। उनकी देहभाषा, छोटी-छोटी चेष्टाएँ और बार-बार सँभलकर खड़े होने वाला पात्र जीवन की जद्दोजहद को व्यक्त करता है। दर्शक उसकी विचित्र स्थितियों पर हँसता भी है और उसकी विवशता से द्रवित भी होता है। इस तरह निजी पीड़ा संकुचित आत्मदया न बनकर सबकी संवेदना से जुड़ जाती है। कठिन जीवन ने चार्ली को सूक्ष्म पर्यवेक्षण, मानवीय गरिमा की पहचान और दुख में भी हास्य खोजने की अद्भुत क्षमता दी। यही उनके व्यक्तित्व और कला की संपन्नता है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन के संघर्षों ने चार्ली को धैर्यवान, संवेदनशील और सृजनशील बनाया। उन्होंने अपनी पीड़ा को हँसी और करुणा की ऐसी कला में बदला जिसमें सामान्य मनुष्य अपना जीवन पहचानता है।

त्वरित सुझाव: चार्ली की गरीबी का केवल उल्लेख न करें; बताएँ कि उससे संवेदना, संघर्षशील पात्र और करुणामय हास्य कैसे विकसित हुए।

11(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जीजी ने इन्दर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया ? इस विषय में लेखक की प्रतिक्रिया को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- धर्मवीर भारती के पाठ में वर्षा से जुड़ा लोकविश्वास और लेखक की आरंभिक तर्कशील आपत्ति आमने-सामने आते हैं।
- जीजी पानी देने को त्याग, दान और सामूहिक कल्याण की भावना से जोड़कर समझाती हैं।

चरण 1: जीजी का तर्क और लोकविश्वास जीजी के अनुसार इन्दर सेना के लड़के इन्द्र से वर्षा माँगने निकले हैं; उन पर पानी डालना व्यर्थ बहाना नहीं, वर्षा के लिए दिया गया अर्घ्य है। वे समझाती हैं कि पाने से पहले कुछ देना पड़ता है और जिस वस्तु का अभाव हो, उसका दान बड़ा त्याग होता है। वे खेती का उदाहरण देती हैं: किसान अच्छी फसल पाने के लिए अपना बीज धरती में डालता है। उसी तरह थोड़े पानी के त्याग से बहुत पानी मिलने की आशा की जाती है। जीजी इस कर्म को केवल निजी लाभ नहीं, सबकी प्यास बुझाने और सामूहिक मंगल की कामना से जोड़ती हैं।

चरण 2: लेखक की प्रतिक्रिया और अंतर्द्वंद्व लेखक को पहले यह रीति अव्यावहारिक लगती है। अकाल और पानी की कमी में लोगों का बालटियों से पानी फेंकना उसे अपव्यय दिखाई देता है; वह इन्दर सेना से चिढ़ता है और जीजी से बहस करता है। जीजी के दान और बीज वाले तर्क उसे तत्काल पूरी तरह सहमत नहीं कर पाते, पर उनके स्नेह, विश्वास और लोककल्याण की भावना का वह सहज खंडन भी नहीं कर पाता। उसके भीतर तर्क और परंपरा का द्वंद्व बना रहता है। पाठ में यही टकराव लोकजीवन की आस्था के साथ उसके मानवीय आधार को भी सामने लाता है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी ने पानी डालने को वर्षा के लिए त्यागपूर्ण दान और सामूहिक मंगल का कर्म बताया। लेखक ने पहले इसे पानी की बरबादी माना, किंतु जीजी की भावनात्मक और मानवीय दृष्टि उसे सोचने पर विवश करती है।

त्वरित सुझाव: जीजी के पक्ष में दान और बीज का उदाहरण दें; लेखक के पक्ष में पानी की कमी और उसके तर्कपूर्ण विरोध को लिखें।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कैसे कहा जा सकता है कि आत्मकथा का 'जूझ' शीर्षक, कथा-नायक की केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक की सार्थकता कथा के मुख्य संघर्ष और नायक के स्वभाव से स्पष्ट होती है।
- आनंदा का संघर्ष शिक्षा पाने, उसे जारी रखने और अपनी प्रतिभा विकसित करने का संघर्ष है।

चरण 1: शीर्षक और केंद्रीय विशेषता जूझ का अर्थ है विपरीत परिस्थितियों से लगातार संघर्ष करना। आत्मकथा का नायक आनंदा कठिनाइयों से हार मानने के बजाय उनसे जूझता है। उसकी केंद्रीय विशेषता दृढ़ संकल्प, परिश्रम और शिक्षा के प्रति लगन है। इसलिए शीर्षक केवल किसी एक घटना का संकेत नहीं करता, बल्कि उसके संपूर्ण व्यक्तित्व और विकास की दिशा बताता है।

चरण 2: शिक्षा और प्रतिभा के लिए संघर्ष पिता उसे पढ़ाने के बजाय खेत के काम में लगाए रखना चाहते हैं। आनंदा पढ़ाई छूट जाने को अपनी नियति स्वीकार नहीं करता। वह दत्ता जी राव की सहायता से पिता को विद्यालय भेजने के लिए तैयार करता है और खेती के काम के साथ पढ़ाई करने की कठिन शर्त निभाता है। विद्यालय में भी वह मेहनत से अपना स्थान बनाता है। सौंदलगेकर मास्टर से प्रेरणा पाकर कविता की लय और रचना का अभ्यास करता है। इस प्रकार आर्थिक, पारिवारिक और शैक्षिक बाधाओं को पार करने का उसका प्रयास शीर्षक को सार्थक करता है। खेत में काम करते हुए भी कविता की पंक्तियाँ गुनगुनाना बताता है कि उसका मन प्रतिकूल श्रम के बीच भी रचनात्मक साधना से जुड़ा रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष आनंदा का हार न मानना और शिक्षा तथा काव्य-सृजन के लिए निरंतर संघर्ष करना ही जूझ शीर्षक में व्यक्त होता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक समझाते समय उसका अर्थ लिखकर पिता की बाधा और पढ़ाई जारी रखने के ठोस प्रसंग जोड़िए।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असफल क्यों रह जाते हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्र की मानसिकता को उसके आदर्शों, व्यवहार और पारिवारिक संबंधों के आधार पर समझना चाहिए।
- यशोधर बाबू का संकट पुराने जीवन-मूल्यों और बदलती पारिवारिक जीवन-शैली के बीच असामंजस्य है।

चरण 1: पुराने आदर्शों से गहरा लगाव यशोधर बाबू किशन दा के सादे, अनुशासित और परंपरागत जीवन को आदर्श मानते हैं। वे उन्हीं के मानकों से अपने परिवार के आचरण को परखते हैं। बदलते समय की नई रुचियों को सहजता से स्वीकार करने के बजाय उनमें कुछ अनुचित या असंगत खोजते हैं। इस कारण नई पीढ़ी की आकांक्षाओं और उनके अनुभवों के बीच दूरी बढ़ती जाती है।

चरण 2: पारिवारिक प्रसंगों से प्रमाण बच्चों और पत्नी की आधुनिक जीवन-शैली उन्हें असहज करती है। परिवार द्वारा विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर आयोजित सिल्वर वैडिंग का उत्सव भी उन्हें अपने संस्कारों के अनुरूप नहीं लगता। भूषण द्वारा दिया गया ड्रेसिंग गाउन उनके प्रति स्नेह का उपहार है, पर वे उसके साथ जुड़ी सुविधा और आधुनिक आदत से आत्मीय संबंध नहीं बना पाते। बच्चों की उन्नति पर गर्व होते हुए भी उनकी रहन-सहन की पद्धति उन्हें खटकती है। वे अपने पुराने अनुभवों को छोड़ नहीं पाते और नए जीवन को पूरी तरह अपना नहीं पाते। किशन दा की तरह जीवन बिताने की इच्छा और परिवार के साथ रहने की आवश्यकता उनके मन में निरंतर तनाव पैदा करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष पुराने आदर्शों का आग्रह तथा नई पीढ़ी को उसके संदर्भ में न समझ पाना यशोधर बाबू के समय के साथ न ढल पाने का मुख्य कारण है।

त्वरित सुझाव: किशन दा के प्रभाव और सिल्वर वैडिंग के उत्सव को जोड़कर पीढ़ियों के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मुअनजो-दड़ो सिन्धु घाटी-सभ्यता का एक नियोजित शहर था । उदाहरणों के आधार पर टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नगर की नियोजित संरचना का प्रमाण सड़कों, आवासों और सार्वजनिक सुविधाओं की व्यवस्थित बनावट होती है।
- मुअनजो-दड़ो के अवशेष उन्नत नागरिक व्यवस्था और सामूहिक जीवन की सुविधा का परिचय देते हैं।

चरण 1: सड़कें और आवासीय व्यवस्था मुअनजो-दड़ो की चौड़ी सड़कें और व्यवस्थित गलियाँ नगर-योजना का प्रमाण हैं। सड़कें परस्पर समकोण पर काटती थीं और उनके बीच आवासीय खंड बने थे। मकान पकी ईंटों से बनाए गए थे। घरों में कमरों, आँगन और स्नान की व्यवस्था मिलती है। यह निर्माण बेतरतीब बसावट के बजाय पहले से सोची गई योजना का संकेत करता है।

चरण 2: सफाई और सार्वजनिक सुविधाएँ नगर में जल-निकासी की सुव्यवस्थित व्यवस्था थी। घरों का पानी नालियों में जाता था और नालियाँ ढकी हुई थीं। कुएँ जल-आपूर्ति की सुविधा देते थे। विशाल सार्वजनिक स्नानागार में जल भरने और निकालने की व्यवस्था थी। इन अवशेषों से पता चलता है कि नगर-निर्माताओं ने निजी आवासों के साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और सामुदायिक आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा था। इतने व्यापक क्षेत्र में निर्माण की यह संगति विकसित योजना और नागरिक समझ के बिना संभव नहीं थी। निर्माण की एकरूपता और स्वच्छता की व्यवस्था इस बात का संकेत हैं कि पूरे नगर की आवश्यकताओं पर सामूहिक दृष्टि से विचार किया गया था।

चरण 3: निष्कर्ष व्यवस्थित सड़कें, पकी ईंटों के मकान, ढकी नालियाँ, कुएँ और विशाल स्नानागार मुअनजो-दड़ो के नियोजित शहर होने की पुष्टि करते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल प्राचीनता न बताइए; सड़क, जल-निकासी और स्नानागार के प्रमाणों को योजना से जोड़िए।

13(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'यशोधर बाबू का व्यक्तित्व द्वन्द्व भावना से ग्रस्त है' – पक्ष या विपक्ष में दो तर्क दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- द्वंद्व का अर्थ है मन में दो विरोधी भावों या मूल्यों का एक साथ उपस्थित रहना।
- यशोधर बाबू के पारिवारिक अनुभवों से उनके अंतर्विरोध स्पष्ट होते हैं।

चरण 1: पक्ष में पहला तर्क कथन के पक्ष में कहा जा सकता है कि यशोधर बाबू बच्चों की प्रगति से प्रसन्न हैं, किंतु उनकी आधुनिक जीवन-शैली को सहज स्वीकार नहीं कर पाते। आर्थिक सफलता उन्हें अच्छी लगती है, पर उससे जुड़ी नई आदतें उनके पुराने संस्कारों से टकराती हैं। इस प्रकार गर्व और असहमति उनके भीतर साथ-साथ रहते हैं।

चरण 2: पक्ष में दूसरा तर्क वे किशन दा के आदर्शों से जुड़े हैं, किंतु अपने परिवार से भी अलग नहीं होना चाहते। सिल्वर वैडिंग के आयोजन में परिवार का उत्साह है, पर वे स्वयं संकोच और असहजता अनुभव करते हैं। वे पुराने जीवन को छोड़ नहीं पाते और नए वातावरण में पूरी तरह घुल नहीं पाते। यही स्थिति उनके व्यक्तित्व का द्वंद्व उजागर करती है।

चरण 3: निष्कर्ष अतः कथन उचित है; बच्चों के प्रति स्नेह और उनकी आधुनिकता से असहमति तथा पुराने आदर्शों और वर्तमान परिवार के बीच खिंचाव उनके दो प्रमुख द्वंद्व हैं।

त्वरित सुझाव: दो तर्क अलग रखिए और प्रत्येक में साथ उपस्थित विरोधी भावों को स्पष्ट कीजिए।

13(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

ऐन फ्रेंक के व्यक्तित्व की दो विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी के प्रसंग व्यक्ति की संवेदनशीलता और स्वतंत्र सोच का परिचय देते हैं।
- चरित्र की प्रत्येक विशेषता को संबंधित व्यवहार या विचार से प्रमाणित करना चाहिए।

चरण 1: संवेदनशील और आत्मचिंतनशील ऐन फ्रेंक अत्यंत संवेदनशील और आत्मचिंतनशील किशोरी है। वह अज्ञातवास के भय, अकेलेपन और मन की उलझनों को गहराई से अनुभव करती है। अपनी डायरी किट्टी को मित्र मानकर वह अपने भीतर की बातें लिखती है। इससे उसके भावनात्मक जीवन की गहराई और स्वयं को समझने की इच्छा प्रकट होती है।

चरण 2: स्वतंत्र और जागरूक विचारों वाली ऐन में स्वतंत्र विचार और स्त्री की गरिमा के प्रति जागरूकता है। वह समाज में स्त्रियों को पुरुषों से कम महत्त्व दिए जाने पर प्रश्न उठाती है और उनके श्रम तथा योगदान को मान्यता मिलने की अपेक्षा करती है। विपरीत परिस्थितियों में भी ऐसे प्रश्नों पर सोचना उसके चिंतनशील और स्वाभिमानी व्यक्तित्व का प्रमाण है।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन फ्रेंक संवेदनशील, आत्मविश्लेषी और स्वतंत्र विचारों वाली किशोरी है; डायरी से आत्मीय संवाद और स्त्री-सम्मान पर उसके विचार इसके उदाहरण हैं।

त्वरित सुझाव: केवल गुण न गिनाइए; किट्टी से संवाद और स्त्री की स्थिति पर विचार जैसे प्रसंग साथ लिखिए।

13(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कैसे कहा जा सकता है कि सिन्धु-घाटी की सभ्यता एक 'लो-प्रोफ़ाइल' सभ्यता थी ? पाठ के आधार पर लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लो-प्रोफ़ाइल सभ्यता में राजसी भव्यता के प्रदर्शन की अपेक्षा सामान्य नागरिक जीवन को अधिक महत्त्व मिलता है।
- सभ्यता की पहचान उसके उपलब्ध स्थापत्य और कलात्मक अवशेषों के आधार पर की जाती है।

चरण 1: वैभव के प्रदर्शन का अभाव सिन्धु-घाटी की सभ्यता के उपलब्ध अवशेषों में विशाल राजमहलों, भव्य समाधियों अथवा राजा की शक्ति का प्रदर्शन करने वाले स्मारकों की प्रधानता नहीं मिलती। उसकी कला में भी राजसत्ता या युद्ध की भव्यता के बजाय छोटे आकार की वस्तुएँ, मुहरें और दैनिक जीवन से जुड़े रूप अधिक दिखाई देते हैं। यह सादगी उसे लो-प्रोफ़ाइल स्वरूप देती है।

चरण 2: नागरिक जीवन की प्रधानता इसके विपरीत व्यवस्थित नगर, जल-निकासी, स्नानागार और घरों की उपयोगी बनावट पर विशेष ध्यान दिखाई देता है। इससे साधारण लोगों के जीवन, सफाई और सामुदायिक सुविधा का महत्त्व प्रकट होता है। पाठ इसी आधार पर इस सभ्यता की पहचान राजसी आडंबर के बजाय उसकी नागरिक व्यवस्था और सुसंस्कृत जीवन-दृष्टि में करता है।

चरण 3: निष्कर्ष राजसी वैभव के सीमित प्रदर्शन और नागरिक सुविधाओं की प्रमुखता के कारण सिन्धु-घाटी की सभ्यता को लो-प्रोफ़ाइल कहा गया है।

त्वरित सुझाव: राजमहलों के अभाव का उल्लेख करने के साथ नागरिक सुविधाओं की प्रधानता अवश्य बताइए।

14. "जूझ' कहानी उभरते किशोर-समाज को प्रेरणा देने वाली एक सफल कहानी है' – इस कथन के आलोक में 'जूझ' कहानी के उन जीवन-मूल्यों की विवेचना कीजिए जो किशोर-किशोरियों के लिए प्रेरक हैं । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक कहानी 'जूझ' शिक्षा प्राप्त करने के लिए संघर्षरत किशोर की कथा है। इसमें प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच लगन, श्रम और आत्मविश्वास बनाए रखने की प्रेरणा मिलती है।
- जीवन-मूल्यों की विवेचना में कथानायक के व्यवहार को आधार बनाना चाहिए। शिक्षा के प्रति निष्ठा, कर्तव्यबोध, सहयोग और रचनात्मकता इस कहानी के प्रमुख मूल्य हैं।

चरण 1: शिक्षा के प्रति लगन और संघर्षशीलता कथानायक पढ़ना चाहता है, लेकिन पिता उसे खेती के काम में लगाए रखना चाहते हैं। गरीबी, घरेलू दबाव और पिता की अनिच्छा उसकी राह में बाधा बनते हैं। वह इनसे हार मानकर पढ़ाई की इच्छा नहीं छोड़ता। माँ की सहायता तथा दत्ता जी राव के हस्तक्षेप से उसे फिर विद्यालय जाने का अवसर मिलता है। यह प्रसंग किशोर-किशोरियों को सिखाता है कि अपने उचित लक्ष्य के लिए धैर्यपूर्वक प्रयत्न करना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर समझदार लोगों का सहयोग लेना चाहिए। शिक्षा के प्रति उसकी आस्था ही कठिन परिस्थितियों में उसे आगे बढ़ने की शक्ति देती है।

चरण 2: श्रम, जिम्मेदारी और समय का सदुपयोग विद्यालय जाने का अवसर मिलने पर भी कथानायक खेती की जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं होता। वह खेत का काम और पढ़ाई साथ-साथ निभाने का प्रयास करता है। कठिन श्रम के बावजूद शिक्षा से जुड़ा रहना उसके कर्तव्यबोध और दृढ़ संकल्प को व्यक्त करता है। उसका आचरण बताता है कि सफलता केवल इच्छा करने से नहीं मिलती; उसके लिए नियमित मेहनत, अनुशासन और उपलब्ध समय का उपयोग आवश्यक है। किशोरों के लिए यह व्यवहार प्रेरक है, क्योंकि वे परिस्थितियों को बहाना बनाए बिना आगे बढ़ना सीख सकते हैं।

चरण 3: आत्मविश्वास, सहयोग और रचनात्मकता पढ़ाई में आए अंतराल और विद्यालय के असहज अनुभवों के कारण कथानायक कठिनाई अनुभव करता है, फिर भी सीखने की कोशिश जारी रखता है। सौंदलगेकर मास्टर का काव्य-पाठ उसकी संवेदना और कल्पना को जगाता है। वह कविता के आनंद को अनुभव करता है और स्वयं रचना करने की ओर बढ़ता है। इससे स्पष्ट होता है कि उत्साह बढ़ाने वाला शिक्षक विद्यार्थी की छिपी प्रतिभा पहचानने में बड़ी भूमिका निभाता है। कहानी किशोरों को हीनभावना से उबरने, अच्छे मार्गदर्शन को स्वीकार करने और अपनी रुचि को परिश्रम से विकसित करने की सीख देती है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार 'जूझ' शिक्षा के प्रति निष्ठा, संघर्षशीलता, श्रमशीलता, कर्तव्यबोध और सृजनात्मक आत्मविश्वास की प्रेरक कहानी है। इसका कथानायक प्रयत्नों और सहयोग से आगे बढ़ता है; इसलिए उसकी जीवन-यात्रा किशोर-किशोरियों के लिए सार्थक आदर्श बनती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में शिक्षा, श्रम और कविता के तीन प्रसंग चुनिए तथा प्रत्येक से निकलने वाला जीवन-मूल्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

14. 'ऐन फ्रेंक की डायरी इतिहास के दर्दनाक अध्याय के अनुभवों की कहानी है' – इस कथन के आलोक में उन जीवन-मूल्यों का उल्लेख कीजिए जो द्वितीय विश्व युद्ध में छिन्न-भिन्न हो गए थे । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक की डायरी नाजी उत्पीड़न के बीच छिपकर जीवन बिताने वाले लोगों की पीड़ा का साक्ष्य है। व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से यह युद्ध और यहूदी-विरोधी हिंसा की अमानवीयता को सामने लाती है।
- यहाँ जीवन-मूल्यों का अर्थ जीवन की रक्षा, समानता, स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा, सहानुभूति और शांति से है। उत्तर में इन्हें डायरी में वर्णित भय तथा अभाव से जोड़कर स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: जीवन के अधिकार और मानवीय गरिमा का विनाश नाजी शासन में यहूदियों को केवल उनकी पहचान के कारण अपमानित

और प्रताड़ित किया गया। उन्हें पकड़कर यातना-स्थलों की ओर भेजा जा रहा था। ऐसी परिस्थिति में मनुष्य के जीवन का मूल्य और उसकी गरिमा सुरक्षित नहीं रह गए थे। ऐन तथा उसके साथ रहने वालों को छिपना पड़ा; पकड़े जाने का भय हर समय उनके साथ था। इससे स्पष्ट होता है कि मानवता और करुणा के स्थान पर क्रूरता तथा घृणा प्रभावी हो गई थीं। किसी समुदाय को जन्म या धर्म के कारण अपराधी मानना मनुष्य की समान प्रतिष्ठा का निषेध है।

चरण 2: स्वतंत्रता, समानता और सुरक्षा का अभाव छिपे हुए लोगों का सामान्य आवागमन, खुलकर बोलना और सहज दैनिक जीवन असंभव हो गया था। दिनचर्या में निरंतर सावधानी रखनी पड़ती थी, क्योंकि छोटी-सी असावधानी भी उनके लिए संकट बन सकती थी। ऐन जैसी किशोरी की स्वाभाविक इच्छाएँ और स्वतंत्र व्यक्तित्व भी इस कैद जैसे जीवन से आहत होते हैं। धर्म और नस्ल के आधार पर भेदभाव ने समानता तथा भाईचारे को नष्ट किया। युद्ध ने घर, परिवार और सुरक्षित भविष्य के भरोसे को तोड़ दिया। इस प्रकार स्वतंत्रता और सुरक्षा जैसे बुनियादी मानवीय अधिकार भी छिन गए।

चरण 3: शांति, विश्वास और संवेदनशीलता का संकट युद्ध के भय, आवश्यक वस्तुओं की कमी और अनिश्चितता ने जीवन को तनावपूर्ण बना दिया था। छिपकर रहने वाले लोगों के संबंधों पर भी तंग परिस्थितियों और लगातार चिंता का दबाव दिखाई देता है। बच्चों और किशोरों का निर्भय बचपन, सहज विकास और भविष्य के प्रति आश्वस्ति छिन्न-भिन्न हो गई। मनुष्य को मनुष्य का सहारा बनना चाहिए, किंतु उत्पीड़न का वातावरण आपसी विश्वास को कमजोर करता है। फिर भी छिपे लोगों की सहायता करने वालों का व्यवहार मानवीय करुणा की महत्ता दिखाता है। वह बताता है कि इन्हीं मूल्यों की रक्षा से अमानवीयता का प्रतिरोध संभव है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन फ्रेंक की डायरी उस दर्दनाक इतिहास की कहानी है जिसमें जीवन की पवित्रता, समानता, स्वतंत्रता, गरिमा, विश्वास और शांति को गहरी चोट पहुँची। यह पाठ मनुष्य को जातीय घृणा तथा युद्ध का विरोध करने और करुणा एवं सह-अस्तित्व की रक्षा करने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल युद्ध की घटनाएँ न गिनाइए; हर अनुभव के साथ नष्ट हुआ मूल्य, जैसे स्वतंत्रता या समानता, स्पष्ट लिखिए।